प्रहरीदुर्ग

यहोवा के राज्य की घोषणा करता है

अक्टूबर - दिसंबर, 2012

आपकी प्रार्थनाएँ

कौन सुनता है?

प्रहरीदुर्ग
यहोवा के राज्य की घोषणा करता है

हर अंक की औसत छपाईः
195 भाषाओं में 4,21,82,000

अक्टूबर - दिसंबर, 2012

प्रहरीदुर्ग पत्रिका का मकसद इस दुनिया के महाराजाधिराज और मालिक, यहोवा परमेश्‍वर की महिमा करना है। जिस तरह पुराने ज़माने में पहरा देने के दुर्ग से एक पहरेदार चारों तरफ नज़र रख सकता था, उसी तरह यह पत्रिका दुनिया में हो रही घटनाओं पर नज़र रखने में हमारी मदद करती है। इतना ही नहीं, यह समझाती है कि बाइबल की भविष्यवाणियों के मुताबिक ये घटनाएँ हमारे समय के लिए क्या मायने रखती हैं। यह सभी लोगों को एक बेहतरीन खुशखबरी देते हुए यह दिलासा देती है कि परमेश्‍वर का राज, जो स्वर्ग में एक सचमुच की सरकार है, बहुत जल्द इस धरती पर सारी बुराइयों का अंत कर देगा और पूरी दुनिया को एक सुंदर बगीचे या फिरदौस में तबदील करेगा। इसके अलावा, यह पत्रिका परमेश्‍वर यहोवा के बेटे यीशु मसीह पर विश्‍वास करने का बढ़ावा देती है, जिसने अपनी जान देकर हमारे लिए हमेशा की ज़िंदगी पाना मुमकिन बनाया है। इसी यीशु को यहोवा परमेश्‍वर ने अपने राज का राजा बनाया है। इस पत्रिका को यहोवा के साक्षी सन् 1879 से लगातार छापते आए हैं और इसका राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। इसमें लिखी बातें किसी इंसान के विचार नहीं, बल्कि परमेश्‍वर के विचार हैं जो बाइबल से लिए गए हैं।

यह पत्रिका बिक्री के लिए नहीं है। इसे पूरी दुनिया में बाइबल की शिक्षा देने के काम के तहत उपलब्ध कराया जा रहा है। इस काम का खर्चा, स्वेच्छा से दिए गए दान से चलाया जाता है। इसमें उत्पत्ति से मलाकी के हवालों के लिए *द होली बाइबल हिंदी - ओ.वी.* इस्तेमाल की गयी है और जिन हवालों के आगे *एन.डब्ल्यू.* लिखा है, वे *न्यू वर्ल्ड ट्रांस्लेशन ऑफ द होली स्क्रिप्चर्स—विद रेफ्रेंसेज़* से लिए गए हैं। मत्ती से प्रकाशितवाक्य के हवालों के लिए *नयी दुनिया अनुवाद—मसीही यूनानी शास्त्र* बाइबल इस्तेमाल की गयी है। इनके अलावा, जहाँ किसी और बाइबल से हवाले लिए गए हैं, वहाँ उसका नाम दिया गया है। ज़ोर देने के लिए बाइबल के चंद हवालों को तिरछे अक्षरों में लिखा गया है।

शुरूआती लेख

3 क्या हमारी प्रार्थनाएँ कोई सुनता है?

4 प्रार्थनाओं का सुननेवाला कौन है?

6 प्रार्थनाओं का सुननेवाला क्यों दुख-तकलीफें दूर नहीं करता?

8 प्रार्थनाओं के सुननेवाले के करीब आइए

हर अंक में

14 अपने बच्चों को सिखाइए —वह ज़िद्दी था पर उसने बात मान ली

20 सुखी परिवार का राज़—दोबारा भरोसा कायम करना

इस अंक में ये लेख भी हैं

11 "नामुमकिन!"—इसका मतलब क्या है?

16 यीशु की शिक्षाएँ समाज पर कैसा असर डालती हैं?

18 सच्चा विश्‍वासी और ज़िम्मेदार नागरिक —कैसे बनें?

24 सुनहरा भविष्य—कैसे पाएँ?

26 भूत-विद्या में क्या बुराई है?

29 यहोवा ने मेरी आँखें खोल दीं!

31 कैसे चलाएँ खर्च जब आमदनी हो कम

"कभी मुझे लगता था कि परमेश्‍वर है, तो कभी यह कि वह नहीं है। इसके बावजूद मैं प्रार्थना करती थी। मुझे यकीन तो नहीं था कि कोई मेरी प्रार्थनाएँ सुन रहा है, लेकिन मेरे दिल में एक आस ज़रूर थी कि काश! कोई होता जो मेरी प्रार्थनाएँ सुनता। मैं मायूस हो चुकी थी और मेरी ज़िंदगी में कोई मकसद नहीं रह गया था। मैं परमेश्‍वर पर विश्‍वास करने से डरती थी, क्योंकि मैं सोचती थी कि बुज़दिल ही परमेश्‍वर पर विश्‍वास करते हैं।"—पट्रीशा,* आयरलैंड।

क्या हमारी **प्रार्थनाएँ** कोई सुनता है?

क्या आप भी पट्रीशा की तरह परमेश्‍वर के वजूद पर शक करते हैं, लेकिन फिर भी उससे प्रार्थना करते हैं? अगर हाँ, तो आपके जैसे और भी कई लोग हैं। नीचे दिए आँकड़ों पर गौर कीजिए।

■ ब्रिटेन में 2,200 लोगों का सर्वे लिया गया। सर्वे के मुताबिक, सिर्फ 22 प्रतिशत लोग मानते हैं कि एक परमेश्‍वर है जिसने इस दुनिया को बनाया है और जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है। जबकि 55 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे कभी-कभार प्रार्थना करते हैं।

■ अलग-अलग देशों में 10,000 लोगों का सर्वे लिया गया जिसमें खुद को नास्तिक कहनेवाले करीब 30 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे प्रार्थना करते हैं।

उन्हें शक क्यों है?

इंग्लैंड का रहनेवाला एलन कहता है: "मैं परमेश्‍वर पर विश्‍वास नहीं करता था, क्योंकि मेरे हिसाब से धर्म का ईजाद लोगों को अपनी मुट्ठी में रखने और पैसा कमाने के लिए किया गया है। मैं यह भी सोचता था कि अगर कोई परमेश्‍वर है, तो दुनिया में इतना अन्याय क्यों है? फिर भी मैं कभी-कभी अकेले में बैठकर 'किसी' से बातें करता। मैं खुद से यह सवाल भी करता, 'इंसान की शुरूआत कैसे हुई?' "

लोग कई कारणों से पूरा यकीन नहीं कर पाते कि प्रार्थनाओं का सुनने-वाला कोई है। एक कारण यह है कि हमें अपने सवालों के जवाब नहीं मिलते, जैसे कि:

■ क्या कोई सृष्टिकर्ता है?

■ क्यों धर्म के नाम पर इतने बुरे-बुरे काम किए जाते हैं?

■ परमेश्‍वर क्यों दुख-तकलीफें दूर नहीं करता?

अगर आपको इन सवालों के जवाब मिल जाएँ, तो क्या आप और भी यकीन के साथ प्रार्थना कर पाएँगे? (*w12*-E 07/01)

---

* इस श्रृंखला में कुछ नाम बदल दिए गए हैं।

प्रार्थनाओं का सुननेवाला कौन है?

अगर प्रार्थनाओं का सुननेवाला कोई है, तो वह सृष्टि-कर्ता ही हो सकता है। क्योंकि जिसने इंसान के दिमाग की रचना की है, वही जान सकता है कि आप क्या सोच रहे हैं। परमेश्वर ही आपकी प्रार्थनाओं को सुन सकता है और ज़रूरत पड़ने पर आपकी मदद कर सकता है। लेकिन शायद आप सोचें, 'क्या सृष्टिकर्ता पर विश्वास करना समझदारी होगी?'

कई लोग सोचते हैं कि सृष्टिकर्ता पर विश्वास करने का मतलब है, आधुनिक विज्ञान के सबूतों को नज़रअंदाज़ करना। लेकिन यह सोच गलत है। आगे दी बात पर गौर कीजिए।

■ हाल ही में अमरीका के 21 बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों के 1,646 विज्ञान के प्रोफेसरों का सर्वे लिया गया। सर्वे के मुताबिक सिर्फ एक-तिहाई प्रोफेसरों ने कहा, "मैं परमेश्वर को नहीं मानता।"

जी हाँ, बहुत-से वैज्ञानिक परमेश्वर के वजूद पर यकीन करते हैं।

सृष्टिकर्ता वजूद में है—इसके सबूत

क्या हमें बिना किसी सबूत के मान लेना चाहिए कि प्रार्थनाओं का सुननेवाला कोई है? नहीं, बिलकुल नहीं। यह लोगों की गलतफहमी है कि विश्वास का मतलब है, बिना किसी सबूत के मान लेना। बाइबल बताती है कि विश्वास "उन असलियतों का *साफ सबूत* है, जो अभी दिखायी नहीं देतीं।" (इब्रानियों 11:1) एक दूसरा अनुवाद कहता है कि विश्वास का मतलब है, "हम चाहे किसी वस्तु को देख नहीं रहे हों किन्तु उसके अस्तित्त्व के विषय में सुनिश्चित होना कि वह है।" (*हिंदी ईज़ी-टू-रीड वर्शन*) एक उदाहरण पर गौर कीजिए: रेडियो तरंगें दिखायी नहीं देतीं, लेकिन आपका मोबाइल फोन उन अदृश्य तरंगों के होने का साफ सबूत देता है, क्योंकि उन्हीं के ज़रिए आवाज़ें संचारित होती हैं। उसी तरह प्रार्थनाओं का सुननेवाला दिखायी नहीं देता, लेकिन कई सबूत हैं जिनकी जाँच करने से आपको यकीन हो जाएगा कि वह वजूद में है।

हमें ये सबूत कहाँ मिल सकते हैं? हमें सिर्फ अपने चारों तरफ देखने की ज़रूरत है। बाइबल यह दलील देती है:

प्रहरीदुर्ग
यहोवा के राज्य की घोषणा करता है

अगर आप और जानना चाहते हैं या घर पर मुफ्त बाइबल अध्ययन करना चाहते हैं, तो कृपया नीचे दिए गए किसी भी नज़दीकी पते पर यहोवा के साक्षियों को लिखिए। शाखाओं के पते की पूरी सूची के लिए www.watchtower.org/address देखिए।

America, United States of: 25 Columbia Heights, Brooklyn, NY 11201-2483. ***Australia:*** PO Box 280, Ingleburn, NSW 1890. ***Britain:*** The Ridgeway, London NW7 1RN. ***Canada:*** PO Box 4100, Georgetown, ON L7G 4Y4. ***France:*** BP 625, F-27406 Louviers Cedex. ***Germany:*** 65617 Selters. ***Hong Kong:*** 4 Kent Road, Kowloon Tong, Kowloon. ***India:*** PO Box 6441, Yelahanka, Bangalore-KAR 560 064. ***Japan:*** 4-7-1 Nakashinden, Ebina City, Kanagawa-Pref, 243-0496. ***Kenya:*** PO Box 21290, Nairobi 00505. ***Nepal:*** PO Box 24438, GPO, Kathmandu. ***Nigeria:*** PMB 1090, Benin City 300001, Edo State. ***South Africa:*** Private Bag X2067, Krugersdorp, 1740. ***Sri Lanka:*** 711 Station Road, Wattala 11300.

Published and Printed by The Watch Tower Bible and Tract Society of India at 927/1 Addevishwanathapura, Rajanukunte, Bangalore 561 203, Karnataka. इस पते पर खत लिखें: Post Box No. 6441, Yelahanka, Bangalore 560 064, Karnataka. Periodicals Postage Paid at Brooklyn, NY, and at additional mailing offices. **POSTMASTER:** Send address changes to Watchtower, 1000 Red Mills Road, **Wallkill, NY 12589-3299.** © 2012 Watch Tower Bible and Tract Society of Pennsylvania. सर्वाधिकार सुरक्षित। Printed in India.
Monthly and supplemental quarterly editions
Vol. 133, No. 19 HINDI October-December, 2012

"बेशक, हर घर का कोई न कोई बनानेवाला होता है, मगर जिसने सबकुछ बनाया वह परमेश्‍वर है।" (इब्रानियों 3:4) क्या आप इस दलील से सहमत हैं? जब आप देखते हैं कि अंतरिक्ष में सारे ग्रह और पिंड कितनी व्यवस्था से घूमते हैं और पृथ्वी पर इंसानी दिमाग, जो सबसे जटिल बनावट है, कितने बेहतरीन तरीके से रचा गया है, या फिर जब आप जीवन की शुरूआत के बारे में सोचते हैं, तो शायद आप इस नतीजे पर पहुँचें कि इंसान से बढ़कर कोई-न-कोई ज़रूर है।[*]

लेकिन प्रकृति से हम परमेश्‍वर के बारे में थोड़ा-बहुत ही सीख पाते हैं। सृष्टि में परमेश्‍वर के वजूद के सबूत देखना ऐसा है, मानो एक बंद दरवाज़े के पीछे से आपको किसी के कदमों की आहट सुनायी दे रही है। आप जानते हैं कि कोई आ रहा है, लेकिन वह कौन है यह आपको नहीं पता। जानने के लिए आपको दरवाज़ा खोलना होगा। उसी तरह यह जानने के लिए कि सृष्टिकर्ता कौन है, हमें भी एक तरह का दरवाज़ा खोलना होगा।

बाइबल वह दरवाज़ा है, जिसे खोलकर आप परमेश्‍वर के बारे में ज्ञान हासिल कर सकते हैं। जब आप देखेंगे कि उसमें दी भविष्यवाणियों की एक-एक बात किस तरह पूरी हुई, तो आपको यकीन हो जाएगा कि परमेश्‍वर अस्तित्त्व में है।[#] लेकिन उससे भी बढ़कर, जब आप पढ़ेंगे कि पहले के समय में परमेश्‍वर ने लोगों के साथ किस तरह व्यवहार किया, तो आप प्रार्थनाओं के सुननेवाले की शख्सियत के बारे में जान पाएँगे।

प्रार्थनाओं का सुननेवाला है कैसा?

बाइबल बताती है कि प्रार्थनाओं का सुननेवाला एक असल शख्स है, जिसे आप जान सकते हैं। और वह समझ के साथ आपकी बात सुन सकता है। यह भरोसा हमें बाइबल की इस

---

[*] परमेश्‍वर के वजूद के बारे में ज़्यादा सबूत पाने के लिए ब्रोशर *जीवन की शुरूआत—पाँच सवाल—जवाब पाना ज़रूरी* और किताब *इज़ देअर ए क्रिएटर हू केअर्स अबाउट यू?* देखिए। इन्हें यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

[#] ब्रोशर *सब लोगों के लिए एक किताब* और *द बाइबल—गॉड्‌स वर्ड ऑर मैन्स?* किताब से आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि बाइबल परमेश्‍वर की प्रेरणा से लिखी गयी है। इन्हें यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

क्या आपके शक करने की वजह धर्म है?

यह जानकर बड़ा अफसोस होता है कि धर्म की वजह से कई लोगों को शक होने लगा है कि एक करुणामय परमेश्‍वर है, जो प्रार्थनाएँ सुनता है। धर्म ने जिस तरह युद्ध और आतंकवाद को बढ़ावा दिया है, साथ ही बच्चों के साथ होनेवाले दुर्व्यवहार को अनदेखा किया है, उसकी वजह से परमेश्‍वर पर आस्था रखनेवाले लोग भी कहने लगे हैं, "मैं परमेश्‍वर को नहीं मानता।"

आखिर धर्म अकसर क्यों बुराई को बढ़ावा देता है? सीधे शब्दों में कहा जाए तो बुरे लोगों ने धर्म के नाम पर गलत काम किए हैं। बाइबल में पहले से बताया गया था कि आगे चलकर मसीही धर्म को किस तरह बुरे कामों के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। पहली सदी के मसीही प्रेषित पौलुस ने अपने समय के मसीही निगरानों से कहा: "तुम्हारे ही बीच में से ऐसे आदमी उठ खड़े होंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।"—प्रेषितों 20:29, 30.

परमेश्‍वर को झूठे धर्म से घृणा है। दरअसल परमेश्‍वर के वचन बाइबल में झूठे धर्म को 'उन *सभी* के खून' का दोषी करार दिया गया है "जिनका इस धरती पर कत्ल किया गया।" (प्रकाशितवाक्य 18:24) झूठे धर्म ने लोगों को प्यार के परमेश्‍वर के बारे में सच्चाई नहीं सिखायी है। (1 यूहन्‍ना 4:8) इस वजह से लोग एक-दूसरे से प्यार नहीं करते और बुरे-बुरे काम करते हैं। परमेश्‍वर की नज़र में झूठे धर्म खून के दोषी हैं।

जो लोग झूठे धर्म की वजह से सताए गए हैं, प्रार्थनाओं का सुननेवाला उनकी तड़प जानता है। वह इंसानों से प्यार करता है और इसी प्यार की खातिर वह जल्द ही यीशु के ज़रिए धर्म के सारे ठेकेदारों का न्याय करेगा। यीशु ने कहा: "उस दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की?' . . . तब मैं उनसे साफ-साफ कह दूँगा: मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना! अरे दुराचारियो, मेरे सामने से दूर हो जाओ।"—मत्ती 7:22, 23.

अब 195 भाषाओं में छापी जाती है: अँग्रेज़ी[#+◊], अकोली, अज़रबाइजानी, अज़रबाइजानी (सिरिलिक), अफ्रीकान्स, अरबी, अल्बेनियन, आइमरा[◊], आइसलैंडिक, आर्मीनियन, आर्मीनियन (पश्‍चिम), इंगाबेरे, इंडोनेशियन, इंडबीली, इटैलियन,[+◊] इब्रानी, इलोको, इसोको, ईबो, उम्बुंडू, उरुउंड, उर्दू, एफिक, एवे, एस्टोनियन, ऐमहैरिक, ओतेतेला, ओरोमो, कज़ाख, कन्‍नड़, कम्बोडियन, किकूयू, किकोंगो, किन्यारवान्डा, किमबुंडू, किरगिज़, किरिबती, किरुंडी, किलूबा, कीकॉन्डे, कीचुआ, केचुआ (अन्काश), केचुआ (आयाकूचो), केचुआ (कूसको), केचुआ (बोलिविया),[◊] कैटेलन, कोंगो, कोरियन,[+◊] क्रोएशियन, क्वांगॉली, क्वान्यामा, खोसा, गारीफूना, गुजराती, गुन, ग्रीक, ग्रीनलैंडिक, ग्वारनी,[+⊙] घॉ, चिचेवा, चिटोंगा, चितूमबूका, चिलूबा, चीनी (पुरानी)[◊] (सिर्फ ऑडियो मैंड्रिन), चीनी (सरल), चूकीज़, चेक,[◊] च्वॉ, जर्मन,[#+◊] ज़ांडे, ज़ापटेक (इसमस), जापानी,[+◊] ज़ुलू,[#] जॉर्जियन, टर्किश, टागालोग,[◊] टिग्रिन्या, टेटम, टोटोनॉक, टोंगन, टॉक पिसिन, डच,[+◊] डेनिश,[◊] तमिल, तहीतियन, तातर, तिव, तुवालुअन, तेलुगू, त्वी, त्सोंगा, थाइ, नडोंगा, नज़ीमा, नावाटल (उत्तरी प्युब्ला), नीउएन, नेपाली, नॉर्वेजियन,[◊] न्यानेका, पंजाबी, पनगासिनन, पलाउअन, पापियामेन्टो (अरूबा), पापियामेन्टो (क्यूरसो), पोनापियन, पोलिश,[+◊] पॉर्चुगीस,[#+⊙◊] फारसी, फिनिश,[◊] फीजियन, फ्रेंच,[+⊙◊] बंगला, बल्गेरियन, बाइकोल, बाउले, बिस्लामा, मंगोलियन, मकुआ, मराठी, मलगासी, मलयालम, माया, मार्शलीज़, मिज़ो, मीहेमूर, मैसडोनियन, मॉरिशन क्रियोल, मॉल्टीस, म्यानमार, यापीज़, यूक्रेनियन, योरुबा, रशियन,[+◊] रारोटोन्गन, रोमेनियन, लिंगाला, लिथुएनियन, लुगांडा, लूंडा, लूओ, लूवाल, लैटवियन, वारे-वारे, वालाइटा, वियतनामी, वेन्डा, वॉलीसियन, शोना, समोअन, सरबियन, सरबियन (रोमन), सांगो, सिंहाला, सिबेम्बा, सिलोज़ी, सेपेदी, सेबवॉनो, सेशैल्स क्रियोल, सेसोथो, सोटसील, सॉलोमन द्वीप पिजिन, स्पैनिश,[#+◊] स्रानानटोंगो, स्लोवाक, स्लोवीनियन, स्वाती, स्वाना, स्वाहिली, स्वीडिश,[◊] हंगेरियन,[+◊] हिंदी, हिलिगेनन, हीरी मोटू, हेतीन क्रियोल, हौसा

[#] ब्रेल में भी उपलब्ध है।
[+] सीडी भी उपलब्ध हैं।
[⊙] एमपी3 सीडी-रॉम भी उपलब्ध हैं।
[◊] www.jw.org पर ऑडियो रिकॉर्डिंग भी उपलब्ध हैं।

आयत से मिलता है: "हे प्रार्थना के सुननेवाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएंगे।" (भजन 65:2) परमेश्वर का एक नाम है और जो लोग उस पर विश्वास रखते हुए प्रार्थना करते हैं, वह उनकी सुनता है। बाइबल कहती है: "*यहोवा* दुष्टों से दूर रहता है, परन्तु धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।"—नीतिवचन 15:29.

यहोवा परमेश्वर में भावनाएँ हैं। उसे 'प्यार का परमेश्वर' और "आनंदित परमेश्वर" कहा गया है। (2 कुरिंथियों 13:11; 1 तीमुथियुस 1:11) बाइबल कहती है कि प्राचीन समय में जब धरती पर बुराई बहुत बढ़ गयी थी, तब परमेश्वर के "हृदय को बड़ी ठेस पहुंची।" (उत्पत्ति 6:5, 6, *हिंदी—कॉमन लैंग्वेज*) यह सरासर झूठ है कि परमेश्वर लोगों की परीक्षा लेने के लिए उन पर तकलीफें लाता है। बाइबल कहती है: "यह सम्भव नहीं कि ईश्वर दुष्टता का काम करे।" (अय्यूब 34:10) लेकिन शायद आप सोचें, 'अगर परमेश्वर सर्व-शक्तिमान है, तो वह दुख-तकलीफें दूर क्यों नहीं करता?'

यहोवा परमेश्वर ने इंसानों को आज़ाद मरज़ी के साथ बनाया है, यानी वे अपने फैसले खुद कर सकते हैं और जैसे चाहें जी सकते हैं। इस तरह परमेश्वर ने इंसानों को इज़्ज़त बख्शी है। क्या हम इस आज़ादी को अनमोल नहीं समझते? दुख की बात है कि कई लोग इस आज़ादी का गलत इस्तेमाल करते हैं और खुद के लिए, साथ ही दूसरों के लिए परेशानियाँ खड़ी करते हैं। इसलिए एक सवाल उठता है जिस पर हमें गह-राई से सोचने की ज़रूरत है: परमेश्वर इंसानों की आज़ादी छीने बगैर दुख-तकलीफें कैसे दूर कर सकता है? इस सवाल पर हम अगले लेख में चर्चा करेंगे। (*w12*-E 07/01)

प्रार्थनाओं का सुननेवाला क्यों **दुख-तकलीफें दूर नहीं करता?**

कुछ लोग परमेश्वर से प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन उन्हें यकीन नहीं होता कि वह वाकई अस्तित्त्व में है। क्यों? शायद इसलिए कि वे दुनिया में इतनी दुख-तकलीफें देखते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि परमेश्वर दुख-तकलीफें दूर क्यों नहीं करता?

हम सब पापी हैं और दुख-तकलीफों के साए में जीते हैं। क्या परमेश्वर ने ऐसी ही ज़िंदगी जीने के लिए हमें बनाया था? अगर उसने हमारे लिए यही चाहा था, तो शायद ही हम उसकी इज़्ज़त कर पाएँ। लेकिन ज़रा इस उदाहरण पर गौर कीजिए: आप शोरूम में एक नयी कार देख रहे हैं। कार बहुत अच्छी है, लेकिन उसका पिछला हिस्सा थोड़ा-सा पिचका हुआ है। क्या आप सोचेंगे कि कार निर्माता ने ही उसे इस तरह बनाया है? बिल-कुल नहीं! आप यही सोचेंगे कि निर्माता ने उसे बिना किसी नुक्स के बनाया था, लेकिन किसी और की गलती या किसी और वजह से कार का पिछला हिस्सा पिचक गया है।

उसी तरह जब हम अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाते हैं तो हम पाते हैं कि प्रकृति में सुंदरता और व्यवस्था है, लेकिन इंसानों में गड़बड़ी और भ्रष्टाचार है। यह देखकर हमें किस नतीजे पर पहुँचना चाहिए? बाइबल सिखाती है कि पर-मेश्वर ने पहले इंसानी जोड़े को सिद्ध यानी बिना किसी कमी के बनाया था, लेकिन फिर उनकी अपनी गलती की वजह से उनमें खराबी आ गयी। (व्यवस्थाविवरण 32:4, 5) मगर खुशी की बात यह है कि परमेश्वर ने उस खराबी को ठीक करने का वादा किया है। उसने कहा है कि वह आज्ञा माननेवाले इंसानों को वापस सिद्ध बना देगा। लेकिन वह ऐसा करने में इतनी देर क्यों लगा रहा है?

क्यों इतनी देर?

जवाब जानने के लिए हमें पहले इस सवाल पर गौर करना होगा कि इंसानों पर किसे हुकूमत करनी चाहिए। यहोवा पर-मेश्वर ने इंसानों को इस तरह नहीं बनाया कि वे खुद पर हुकूमत कर सकें। बाइबल कहती है: "मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं।" (यिर्मयाह 10:23) इंसानों को पर-

मेश्वर की हुकूमत के अधीन रहना था। मगर अफसोस, पहले इंसानी जोड़े ने परमेश्वर की हुकूमत के खिलाफ बगावत करने का चुनाव किया। परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने से वे पापी बन गए। (1 यूहन्ना 3:4) इस तरह, उन्होंने अपनी सिद्धता खो दी और खुद को और अपनी संतानों को नुकसान पहुँचाया।

यहोवा ने हज़ारों सालों से इंसानों को खुद पर हुकूमत करने की छूट दी, ताकि यह साबित हो जाए कि किसकी हुकूमत बेहतर है। इतिहास गवाह है कि इंसान सही तरह से हुकूमत करने के काबिल नहीं है। चाहे किसी भी तरह की सरकार हो, वह लोगों पर दुख-तकलीफें ही लायी है। कोई भी सरकार युद्ध, अपराध, अन्याय या बीमारी खत्म नहीं कर पायी है।

परमेश्वर सारे नुकसान को कैसे ठीक करेगा?

बाइबल वादा करती है कि परमेश्वर जल्द ही एक ऐसी नयी दुनिया लाएगा जहाँ न्याय का बसेरा होगा। (2 पतरस 3:13) उस दुनिया में सिर्फ उन लोगों को रहने दिया जाएगा, जो अपनी मरज़ी से एक-दूसरे और परमेश्वर से प्यार करने का चुनाव करते हैं।—व्यवस्थाविवरण 30:15, 16, 19, 20.

परमेश्वर कब दुख-तकलीफों को दूर करेगा? बाइबल कहती है कि वह ऐसा "न्याय के दिन" में करेगा, जो बहुत तेज़ी से पास आ रहा है। उस दिन उन लोगों को भी खत्म कर दिया जाएगा जो दूसरों को तकलीफ पहुँचाते हैं। (2 पतरस 3:7) इसके बाद परमेश्वर का नियुक्त राजा यीशु मसीह स्वर्ग से आज्ञाकारी इंसानों पर हुकूमत करेगा। (दानिय्येल 7:13, 14) यीशु के शासन में क्या होगा? बाइबल कहती है: "नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएंगे।"—भजन 37:11.

राजा के तौर पर यीशु बीमारी, बुढ़ापा और मौत जैसी सारी समस्याएँ हमेशा के लिए खत्म कर देगा। ये समस्याएँ इंसानों पर इसलिए आयीं, क्योंकि उन्होंने यहोवा परमेश्वर के खिलाफ बगावत की थी, जो "जीवन का सोता" है। (भजन 36:9) यीशु उन सभी लोगों को ठीक कर देगा जो उसकी प्यार-भरी हुकूमत को

कबूल करते हैं। उसके शासन में बाइबल की ये भविष्यवाणियाँ पूरी होंगी:

■ "कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं; और जो लोग उस में बसेंगे, उनका अधर्म क्षमा किया जाएगा।"—यशायाह 33:24.

■ "[परमेश्वर] उनकी आँखों से हर आँसू पोंछ देगा, और न मौत रहेगी, न मातम, न रोना-बिलखना, न ही दर्द रहेगा। पिछली बातें खत्म हो चुकी हैं।"—प्रकाशितवाक्य 21:4.

क्या यह जानकर हमें तसल्ली नहीं मिलती कि परमेश्वर जल्द ही इंसानों को पहुँचे नुकसान को ठीक करने का अपना वादा पूरा करेगा? इस बीच हम यकीन रख सकते हैं कि वह हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है, फिर चाहे वह कुछ समय के लिए दुख-तकलीफें क्यों न रहने दे।

परमेश्वर वजूद में है, वह आपकी सुन सकता है, यहाँ तक कि आपका कराहना भी। वह चाहता है कि आप उस समय में जीएँ, जब आपके सारे शक और दर्द दूर हो जाएँगे। (*w12*-E 07/01)

प्रार्थनाओं के सुननेवाले के करीब आइए

परमेश्वर पर विश्वास करनेवाले कई लोग न तो अपने विश्वास का ठोस सबूत दे सकते हैं, न ही यह समझा सकते हैं कि क्यों धर्म के नाम पर अकसर बुरे-बुरे काम किए जाते हैं या क्यों परमेश्वर दुख-तकलीफें खत्म नहीं करता। ज़्यादा-से-ज़्यादा वे एक ऐसे परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं जिसे वे खुद नहीं जानते।

लेकिन आप परमेश्वर के करीब आ सकते हैं। परमेश्वर के बारे में ज्ञान लेने से आप उससे प्यार और उसकी कदर करने लगेंगे। इस तरह धीरे-धीरे आपका विश्वास मज़बूत होता जाएगा। सच्चा विश्वास सबूतों पर आधारित होता है। (इब्रानियों 11:1) इसलिए अगर आप सबूतों की जाँच करें और परमेश्वर के बारे में सच्चाई सीखें, तो आप उसे एक दोस्त की तरह जान पाएँगे और उससे बात कर पाएँगे। कुछ लोगों के अनुभव पर गौर कीजिए जो एक समय पर परमेश्वर के वजूद पर शक करते थे, लेकिन फिर भी उससे प्रार्थना करते थे।

■ *पट्रीशा, जिसका ज़िक्र पहले लेख में किया गया है।* "एक दिन मैं अपने करीब दस दोस्तों के साथ थी जब धर्म के बारे में चर्चा छिड़ गयी। मैंने उन्हें बताया कि एक बार यहोवा की एक साक्षी हमारे घर आयी थी। वह मेरे पापा से बात करने लगी, जो नास्तिक थे। उन दोनों की बातचीत से बचने के लिए मैं घर से बाहर निकल गयी। यह सुनकर मेरे एक दोस्त ने कहा, 'हो सकता है धर्म के बारे में सही जानकारी यहोवा के साक्षियों के पास हो।'

तभी एक और दोस्त ने कहा, 'क्यों न हम उनकी किसी सभा में जाकर देखें?' और हम सबने यही किया। हालाँकि सभाओं में जो बातें बतायी जाती थीं, उन पर हमें उतना यकीन नहीं होता था फिर भी हममें से कुछ वहाँ जाते रहे क्योंकि साक्षी बड़े दोस्ताना थे।

लेकिन एक रविवार को सभा में दिए जा रहे एक भाषण में मैंने जो सुना, उससे मेरा रवैया बदल गया। भाषण में वक्ता ने बताया कि लोग दुख-तकलीफों से क्यों गुज़रते हैं। मैं यह बात कभी नहीं समझ पायी थी कि इंसान को शुरूआत में सिद्ध, यानी बिना किसी कमी के बनाया गया था और एक आदमी की वजह से पाप और मौत आयी जो फिर सारी मानवजाति में फैल गयी। वक्ता ने यह भी समझाया कि पहले आदमी ने जो खो दिया था वह इंसानों को वापस दिलाने के लिए यीशु की मौत ज़रूरी थी।* (रोमियों 5:12, 18, 19) अचानक मेरी समझ में सबकुछ आ गया। मैंने मन-ही-मन कहा, 'परमेश्वर है और वह सचमुच हमारी परवाह करता है।' मैंने बाइबल का अध्ययन करना जारी रखा और जल्द ही मुझे यकीन हो गया कि परमेश्वर अस्तित्व में है। ज़िंदगी में पहली बार मैं एक ऐसे शख्स से प्रार्थना कर पा रही थी जिसे मैं जानने लगी थी।"

■ *एलन, जिसका ज़िक्र भी पहले लेख में किया गया है।* "एक

* यीशु के फिरौती बलिदान के बारे में ज़्यादा जानने के लिए *बाइबल असल में क्या सिखाती है?* किताब का अध्याय 5 देखिए। इसे यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

सच्चा विश्वास सबूतों पर आधारित होता है और इसके लिए ज़रूरी है कि हममें परमेश्वर के बारे में सच्चाई जानने की इच्छा हो

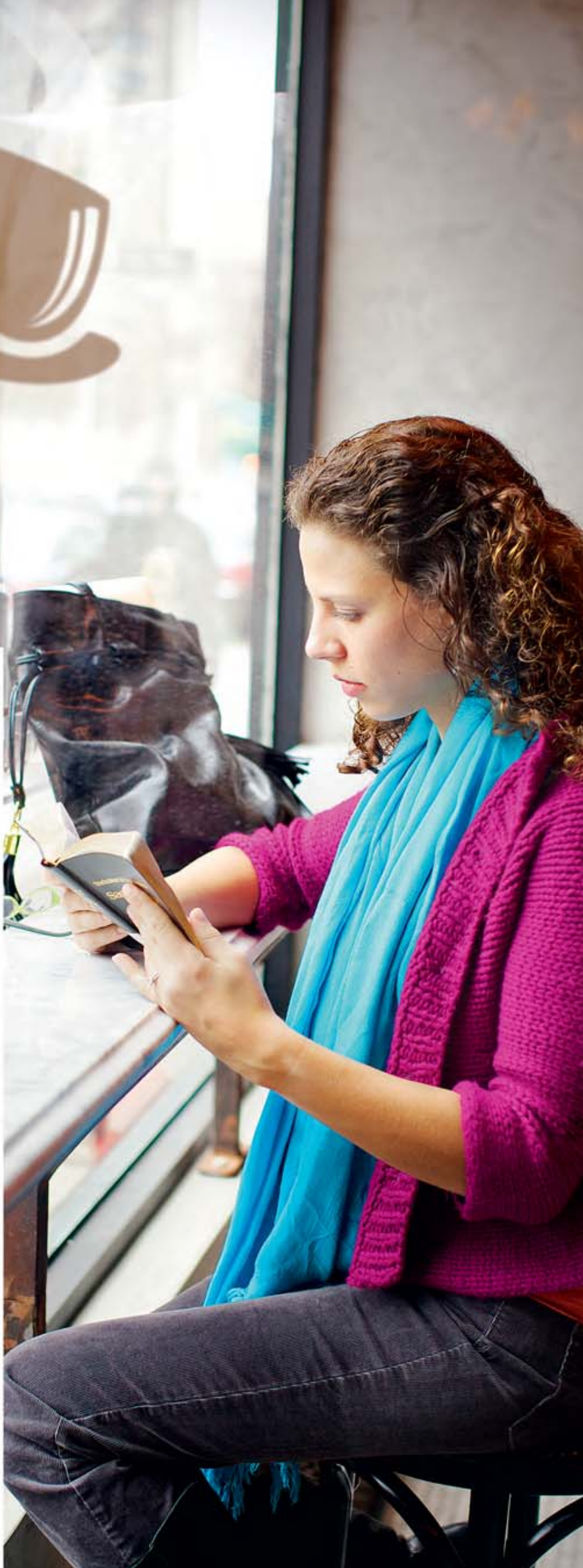

दिन यहोवा के साक्षी हमारे घर आए और मेरी पत्नी ने उन्हें अंदर बुलाया क्योंकि वे धरती पर हमेशा तक जीने के बारे में बता रहे थे और मेरी पत्नी उस बारे में और जानना चाहती थी। मुझे गुस्सा आ रहा था। इसलिए साक्षियों को सामने के कमरे में बिठाकर मैं अपनी पत्नी को रसोई में ले गया और उससे कहा, ‘बेवकूफ मत बनो। उनकी इस बात पर कोई कैसे विश्वास कर सकता है!’

मेरी पत्नी ने जवाब दिया, ‘ऐसा है तो आप जाकर उन्हें गलत साबित कीजिए।’

मैं वापस तो गया, पर कुछ भी साबित नहीं कर पाया। लेकिन उन्होंने बड़ी अच्छी तरह मुझसे बात की और जाते-जाते मुझे एक किताब दी जिसमें बताया गया था कि जीवन की शुरूआत, सृष्टि से हुई या विकासवाद से। उसमें जो तर्क दिया गया था, वह समझने में इतना आसान और ऐसे ठोस सबूतों पर आधारित था कि मुझमें परमेश्वर के बारे में और जानने की इच्छा जागी। मैं साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करने लगा और जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि धर्म के बारे में बाइबल जो सिखाती है वह मेरी धारणा से बिलकुल अलग है। जैसे-जैसे मैं यहोवा के बारे में सीखता गया, मैं उससे खास बातों को लेकर प्रार्थना करने लगा। कुछ मामलों में मैं गलत नज़रिया रखता था, जिन्हें बदलने के लिए मैंने प्रार्थना की। मुझे यकीन है कि यहोवा ने मेरी प्रार्थनाओं का जवाब दिया।”

■ *एंड्रू, जो इंग्लैंड में रहता है।* "मुझे विज्ञान में बहुत दिलचस्पी थी और कई वैज्ञानिक मामलों पर मेरे ठोस विचार थे। लेकिन विकासवाद के सिद्धांत को मैं सिर्फ इस वजह से मानता था क्योंकि दूसरे लोग कहते थे कि इसे साबित किया जा चुका है। दुनिया में होनेवाली बुराई को देखकर मैं परमेश्‍वर पर विश्‍वास नहीं करता था।

लेकिन कभी-कभी मैं सोचता था: 'अगर ऊपरवाला है, तो मैं उससे जानना चाहूँगा कि ज़िंदगी का मकसद क्या है। दुनिया में इतने अपराध और युद्ध क्यों होते हैं?' जब मैं किसी परेशानी में होता, तो कभी-कभी मैं मदद के लिए प्रार्थना करता। लेकिन मुझे पता नहीं होता कि मैं किससे मदद की गुहार लगा रहा हूँ।

फिर किसी ने मेरी पत्नी को यहोवा के साक्षियों द्वारा प्रकाशित एक ट्रैक्ट *क्या यह दुनिया विनाश से बचेगी?* दिया। यही सवाल मेरे मन में कई बार उठ चुका था। ट्रैक्ट पढ़कर मैं बाइबल के बारे में सोचने लगा, 'क्या इसमें दी बातों पर गौर करने से फायदा होगा?' बाद में जब मैं छुट्टी पर था, तो किसी ने मुझे एक किताब *द बाइबल—गॉड्‌स वर्ड ऑर मैन्स?* दी।* जब मुझे एहसास हुआ कि बाइबल में दी बातें सच्चे विज्ञान से पूरी तरह मेल खाती हैं, तो मुझे लगा कि बाइबल के बारे में और ज़्यादा सीखना चाहिए। इसलिए जब एक यहोवा के साक्षी ने मेरे सामने बाइबल का अध्ययन करने की पेशकश रखी, तो मैंने तुरंत उसे कबूल कर लिया। जैसे-जैसे मैं यहोवा परमेश्‍वर के मकसद के बारे में समझ हासिल करता गया, वह मेरे लिए एक असल शख्स बनता गया जिससे मैं दिल खोलकर प्रार्थना कर सकता हूँ।"

"जैसे-जैसे मैं यहोवा परमेश्‍वर के मकसद के बारे में समझ हासिल करता गया, वह मेरे लिए एक असल शख्स बनता गया जिससे मैं दिल खोलकर प्रार्थना कर सकता हूँ"

■ *जैन, जिसकी परवरिश लंदन में एक प्रोटेस्टेंट परिवार में हुई।* "धर्म में फैले कपट और लोगों की दुख-तकलीफें देखकर मैंने धर्म पर विश्‍वास करना ही छोड़ दिया था। मैंने कॉलेज की पढ़ाई भी छोड़ दी और अपना खर्च चलाने के लिए गाना गाने और गिटार बजाने लगी। फिर मेरी मुलाकात पैट से हुई। उसकी परवरिश कैथोलिक परिवार में हुई थी और उसने भी मेरी तरह धर्म पर विश्‍वास करना छोड़ दिया था।

हम एक वीरान घर में दूसरे कई लोगों के साथ रहने लगे। उन्होंने भी पढ़ाई छोड़ दी थी और उन्हें पूर्वी देशों के धर्मों में दिलचस्पी थी। हम अकसर देर रात तक ज़िंदगी के मतलब पर गंभीर चर्चाएँ करते रहते। हालाँकि मैं और पैट परमेश्‍वर पर विश्‍वास नहीं करते थे, लेकिन हमें लगता था कि कोई शक्‍ति ज़रूर है तभी तो इस धरती पर जीवन कायम है।

फिर काम की तलाश में हम उत्तरी इंग्लैंड चले गए। वहाँ हमारा बेटा पैदा हुआ। एक रात वह बहुत बीमार हो गया। हालाँकि मैं परमेश्‍वर पर विश्‍वास नहीं करती थी लेकिन उससे प्रार्थना करने लगी। कुछ समय बाद, पैट और मेरा रिश्‍ता बिगड़ने लगा और मैं अपने बच्चे को लेकर घर से निकल गयी। फिर से मैं मदद के लिए प्रार्थना करने लगी, यह सोचकर कि शायद कोई सुन रहा हो। मुझे पता नहीं था कि पैट भी यही कर रहा है।

उसी दिन दो यहोवा के साक्षी पैट से मिले। उन्होंने उसे बाइबल से कुछ कारगर सलाह दी। पैट ने मुझे फोन किया और कहा कि क्यों न हम दोनों, यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करें। बाइबल से हमने सीखा कि परमेश्‍वर को खुश करने के लिए हमें कानूनी तौर पर शादी करनी होगी। यह आज्ञा मानना हमारे लिए बहुत मुश्‍किल था, क्योंकि हमारा रिश्‍ता एक नाज़ुक दौर से गुज़र रहा था।

हम बाइबल की भविष्यवाणियों के पूरा होने, दुख-तकलीफों की वजह और परमेश्‍वर के राज के बारे में ज़्यादा जानना चाहते थे। धीरे-धीरे हमें पता चला कि परमेश्‍वर हम इंसानों की परवाह करता है। तब हममें उसकी मरज़ी पूरी करने की इच्छा जागी। हमने कानूनी तौर पर शादी कर ली। परमेश्‍वर के वचन में दी बुद्धि-भरी सलाह ने हमें अपने तीन बच्चों की परवरिश करने में बहुत मदद दी। हमें यकीन है कि यहोवा ने हमारी प्रार्थनाओं का जवाब दिया।"

खुद सबूतों को परखिए

इस लेख में जिनका ज़िक्र किया गया है, उनकी तरह लाखों लोगों की आँखों पर से झूठे धर्मों का परदा उठ गया है। वे जान गए हैं कि परमेश्‍वर दुख-तकलीफों को क्यों इजाज़त देता है। क्या आपने गौर किया कि हर मामले में बाइबल की सही समझ ने लोगों को यकीन दिलाया कि यहोवा वाकई में हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है?

क्या आप इस बात के सबूतों की जाँच करना चाहेंगे कि परमेश्‍वर वजूद में है? क्या आप यहोवा के बारे में सच्चाई जानना और "प्रार्थना के सुननेवाले" के करीब आना चाहेंगे? (भजन 65:2) अगर हाँ, तो आपकी मदद करने में यहोवा के साक्षियों को बहुत खुशी होगी। (*w12*-E 07/01)

* इसे यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

“नामुमकिन!”
इसका मतलब क्या है?

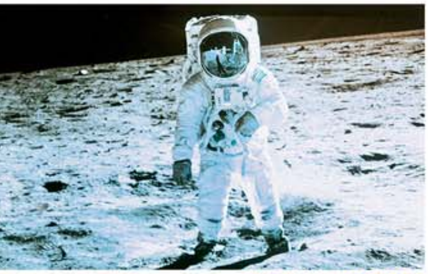
NASA photo

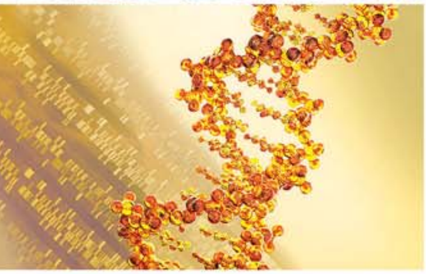

“कल की नामुमकिन चीज़ों को मुमकिन बना दिया [गया] है।”
—रॉनल्ड रीगन

टाइटैनिक जहाज़ सन् 1912 में अपने सफर पर निकला। वह अपने समय का सबसे बड़ा और सबसे आरामदायक समुद्री जहाज़ था। उसके आधुनिक डिज़ाइन की वजह से कहा जाता था कि *टाइटैनिक* का “डूबना नामुमकिन” है। लेकिन फिर जो हुआ वह सभी जानते हैं। अपनी पहली यात्रा में ही वह उत्तरी अटलांटिक में बर्फ की एक चट्टान से टकराकर डूब गया। जहाज़ के साथ उसमें सफर कर रहे करीब 1,500 यात्री भी डूबकर मर गए। जिस जहाज़ के बारे में कहा जाता था कि उसका डूबना नामुमकिन है, वह कुछ ही घंटों में समुद्र की गहराइयों में समा गया।

शब्द “नामुमकिन” का मतलब अलग-अलग हो सकता है। हम किसी काम के बारे में कह सकते हैं कि उसे करना नामुमकिन है, या किसी चीज़ के बारे में कि उसे समझना नामुमकिन है, या किसी हालात के बारे में कि उसे सहना नामुमकिन है। आज विज्ञान ने जो तरक्की की है, उसे एक समय पर नामुमकिन माना जाता था क्योंकि उस समय वह बात इंसान की काबिलीयत के बाहर, यहाँ तक कि कल्पना के भी बाहर थी। इंसान का चाँद पर कदम रखना, मंगल ग्रह पर यान भेजना और उसे धरती से नियंत्रित करना, इंसान के डी.एन.ए. की पूरी-पूरी जानकारी पाना और दूसरे शहर या दुनिया के दूसरे हिस्से में हो रही घटना को उसी वक्त अपनी आँखों से देखना, ये सारी बातें आज मुमकिन हैं, जिन्हें बस 50 साल पहले तक नामुमकिन समझा जाता था। इस बारे में अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति रॉनल्ड रीगन ने एक बार विज्ञान के अलग-अलग क्षेत्र के प्रमुख लोगों को संबोधित करते हुए कहा था: “टेकनॉलजी के इस सुनहरे दौर में जीनेवाले आप लोगों ने कल की नामुमकिन चीज़ों को मुमकिन बना दिया है।”

आज के समय में जो हैरतअंगेज़ उपलब्धियाँ हासिल हो रही हैं, उसे ध्यान में रखते हुए प्रोफेसर जॉन ब्रोबेक ने कहा: “आज कोई वैज्ञानिक यह दावा नहीं कर सकता कि फलाँ चीज़ नामुमकिन है। वह सिर्फ इतना कह सकता है कि फिलहाल यह मुश्किल है। वह चीज़ नामुमकिन इस हिसाब से हो सकती है कि उसके बारे में अभी तक उतनी जानकारी नहीं मिली है।” प्रोफेसर आगे कहते हैं, जब कोई बात हमें वाकई नामुमकिन लगती है, तो उसे समझने के लिए “हमें अपने जैविक और मानव-विज्ञान में एक अनजाने ऊर्जा को शामिल करने की ज़रूरत होती है। हमारे शास्त्र में इस ऊर्जा के स्रोत को परमेश्वर की शक्ति कहा गया है।”

परमेश्वर के लिए सभी बातें मुमकिन हैं

सदियों पहले इस धरती पर एक महान पुरुष जीया था, जिसका नाम था यीशु मसीह। उसने कहा: "जो बातें इंसानों के लिए नामुमकिन हैं, वे परमेश्वर के लिए मुमकिन हैं।" (लूका 18:27) परमेश्वर की पवित्र शक्ति पूरी कायनात की सबसे ताकतवर शक्ति है। उसे हम किसी भी तरह से नाप नहीं सकते। पवित्र शक्ति की मदद से हम वे काम भी कर सकते हैं, जो अपनी ताकत से करना हमारे लिए नामुमकिन है।

कई बार हमें लगता है कि हम जिस हालात में फँसे हैं, उसका सामना कर पाना हमारे लिए नामुमकिन है। जैसे, शायद हमारे किसी अज़ीज़ की मौत की वजह से हममें जीने की कोई आस न रह गयी हो। या हमारे जीवन-साथी के साथ हमारा रिश्ता इस हद तक बिगड़ गया हो कि अब साथ निभाना नामुमकिन लग रहा हो। या शायद हमें निराशा ने इस कदर घेर लिया हो कि कोई उम्मीद नज़र न आ रही हो। हम शायद बेबस और बेसहारा महसूस कर रहे हों। ऐसे में हम क्या कर सकते हैं?

बाइबल बताती है कि जो व्यक्ति, सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करता है, उसकी पवित्र शक्ति की मदद के लिए प्रार्थना करता है और परमेश्वर को खुश करने की हर मुमकिन कोशिश करता है, उसे बड़ी-से-बड़ी रुकावटें पार करने में परमेश्वर से मदद मिल सकती है। यीशु ने जो भरोसा दिलाया उस पर गौर कीजिए: "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'यहाँ से उखड़कर समुद्र में जा गिर,' और अपने दिल में ज़रा भी शक न करे मगर विश्वास रखे कि जो वह कह रहा है वह हो जाएगा, तो उसके लिए वैसा ही हो जाएगा।" (मरकुस 11:23) जब हम परमेश्वर के वचन और उसकी पवित्र शक्ति को अपनी ज़िंदगी में असर करने देते है, तब हमारे लिए हर तरह के हालात का सामना करना मुमकिन हो जाता है।

एक व्यक्ति की मिसाल पर गौर कीजिए जिसकी पत्नी की मौत, कैंसर की वजह से हुई। उन दोनों ने 38 साल साथ गुज़ारे थे। पत्नी की मौत के बाद वह पूरी तरह टूट गया। उसे लगा कि अब उसका जीना नामुमकिन है। कभी-कभी वह सोचता था कि उसे भी मर जाना चाहिए। वह कहता है कि उसे लगता था मानो वह घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में चल रहा है। जिस मुश्किल दौर का सामना करना उसे नामुमकिन लग रहा था उसे वह कैसे पार कर पाया? वह कहता है कि वह रो-रोकर परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा, रोज़ाना बाइबल पढ़ता रहा और परमेश्वर की पवित्र शक्ति का मार्गदर्शन तलाशता रहा। इन्हीं बातों ने उसे हिम्मत दी।

एक शादीशुदा जोड़े की ज़िंदगी में काफी परेशानियाँ खड़ी हो गयी थीं। पति अपनी पत्नी को बहुत मारता-पीटता था और उसमें कई बुरी आदतें भी थीं। पत्नी के लिए उसके साथ जीना नामुमकिन हो गया था। उसने खुदकुशी करने की कोशिश की। कुछ समय बाद, उसका पति यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करने लगा। वह जो कुछ सीखता गया, उससे वह अपनी बुरी आदतों और गुस्से पर काबू पा सका। ये "नामुमकिन" बदलाव देखकर उसकी पत्नी हैरान रह गयी।

जब आप ज़िंदगी से ना-उम्मीद हो जाते हैं,
तो आप किसकी ओर देखते हैं?

एक दूसरे व्यक्ति को ड्रग्स की लत थी और वह बदचलन ज़िंदगी जीता था। उसे लगता था कि उसकी ज़िंदगी एक ऐसे दलदल में फँस चुकी है जहाँ से निकलने की कोई आशा नहीं। वह कहता है, "मैं अपना आत्म-सम्मान पूरी तरह खो चुका था।" ऐसे वक्त में उसने परमेश्वर से प्रार्थना की: "हे ईश्वर, मैं जानता हूँ कि आप कहीं हो। मेरी मदद कीजिए!" कुछ ही समय बाद वह यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करने लगा और नतीजा, वह अपनी ज़िंदगी में बड़े-बड़े बदलाव कर पाया। वह कहता है, "कई बार मेरा ज़मीर मुझे बहुत कचोटता था और मैं खुद को नकारा समझता था। कभी-कभी मैं बिलकुल निराश हो जाता था। लेकिन परमेश्वर के वचन की मदद से मैं इन बुरे खयालों से लड़ पाया। रात को जब मुझे नींद नहीं आती थी, तो मैं मन में बाइबल के उन वचनों को दोहराता था जो मुझे याद होते थे। इस तरह मैं अपना ध्यान अच्छी बातों पर लगा पाया।" आज उसकी शादी हो चुकी है और वह बहुत खुश है। वह अपनी पत्नी के साथ मिलकर दूसरों को परमेश्वर के वचन की शक्ति पर भरोसा करने में मदद देता है। जवानी में जब वह एक खराब ज़िंदगी जी रहा था, तब उसने सोचा भी नहीं होगा कि वह इतने बड़े-बड़े बदलाव करेगा।

इन अनुभवों से पता चलता है कि परमेश्वर के वचन में वाकई ताकत है और उसकी पवित्र शक्ति हमारी ज़िंदगी में

“नामुमकिन” को भी मुमकिन बना सकती है। लेकिन शायद आप कहें, “इस सब के लिए विश्वास चाहिए!” जी हाँ, यह सच है। दरअसल बाइबल कहती है, “विश्वास के बिना परमेश्वर को खुश करना नामुमकिन है।” (इब्रानियों 11:6) लेकिन सोचिए: आपका एक अच्छा दोस्त जो शायद किसी बैंक का मैनेजर या किसी बड़े ओहदे पर काम करता है, आपसे कहता है: “परेशान मत हो। जब भी ज़रूरत हो मेरे पास आ जाना।” कोई शक नहीं कि उसके इस वादे से आपको बहुत तसल्ली मिलेगी। लेकिन दुख की बात है कि इंसान अकसर अपना वादा पूरा नहीं कर पाता। शायद आपके दोस्त के हालात इतने खराब हो जाएँ कि चाहकर भी उसके लिए अपना वादा पूरा कर पाना नामुमकिन हो जाए। या अगर आपके दोस्त की मौत हो जाती है, तो उसके नेक इरादे और आपकी मदद करने की काबिलीयत भी उसके साथ खत्म हो जाएगी। लेकिन परमेश्वर के साथ ऐसा कुछ नहीं हो सकता। बाइबल हमें भरोसा दिलाती है: *“परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।”*—लूका 1:37, *अ न्यू हिंदी ट्रांस्लेशन।*

“क्या तू इस पर विश्वास करती है?”

बाइबल में ऐसे कई वाकये दर्ज़ हैं, जो ऊपर दिए वचन को सच साबित करते हैं। कुछ उदाहरणों पर गौर कीजिए।

सारा नाम की 90 साल की एक स्त्री से जब कहा गया कि वह एक बेटे को जन्म देगी, तो वह हँसने लगी। लेकिन ऐसा ही हुआ, उसने एक बेटे को जन्म दिया और उसी से आगे चलकर इसराएल राष्ट्र बना। एक आदमी को एक बड़ी मछली ने निगल लिया। लेकिन वह तीन दिन तक उसके पेट में ज़िंदा रहा और जब वह बाहर निकला, तो उसने इस घटना के बारे में लिखा। उस आदमी का नाम था, योना। लूका नाम के एक व्यक्ति ने लिखा कि एक लड़का जिसका नाम युतुखुस था, ऊपर वाले कमरे की खिड़की से गिरकर मर गया, लेकिन फिर उसे ज़िंदा कर दिया गया। लूका एक डॉक्टर था और जानता था कि मौत और बेहोशी में क्या फर्क है। ये घटनाएँ किस्से-कहानियाँ नहीं हैं। अगर आप ध्यान से इन घटनाओं के बारे में खोजबीन करें, तो आप पाएँगे कि ये सभी सच हैं।—उत्पत्ति 18:10-14; 21:1, 2; योना 1:17; 2:1, 10; प्रेषितों 20:9-12.

यीशु ने मारथा नाम की एक स्त्री से यह हैरतअंगेज़ बात कही: “हर कोई जो ज़िंदा है और मुझ पर विश्वास दिखाता है, वह कभी न मरेगा।” भविष्य के बारे में किया गया यीशु का यह वादा सुनने में शायद नामुमकिन लगे, लेकिन इसके बाद यीशु ने मारथा से एक अहम सवाल किया: “क्या तू इस पर विश्वास करती है?” इस सवाल पर हमें भी गौर करना चाहिए।—यूहन्ना 11:26.

धरती पर हमेशा की ज़िंदगी—नामुमकिन?

एक वैज्ञानिक अध्ययन के बाद वैज्ञानिकों ने यह लिखा: “वह समय दूर नहीं जब हमारी उम्र और भी लंबी होगी, शायद हम हमेशा तक जी पाएँगे।” *द न्यू इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका* बताती है कि मौत की वजह हमारी कोशिकाओं या दूसरी प्रक्रियाओं का कमज़ोर होना नहीं है, बल्कि कोई अनजानी वजह है जिससे शरीर की प्रक्रियाएँ गड़बड़ा जाती हैं या बंद पड़ जाती हैं। उसमें बताया गया: “शरीर की जटिल बनावट को नियंत्रित करनेवाली प्रक्रियाओं में रुकावट आने की वजह से शायद एक व्यक्ति बूढ़ा हो जाता है।”

इसमें कोई शक नहीं कि हमेशा तक जीने के बारे में विज्ञान जितने भी तर्क देता है वे बहुत दिलचस्प हैं, लेकिन इस बात पर विश्वास करने की सबसे बड़ी वजह बाइबल से मिलती है। हमारे जीवन का स्रोत, सृष्टिकर्ता यहोवा परमेश्वर वादा करता है कि “वह मृत्यु को सदा के लिये नाश करेगा।” (भजन 36:9; यशायाह 25:8) क्या आप इस वादे पर यकीन करते हैं? यह वादा यहोवा ने किया है और झूठ बोलना उसके लिए नामुमकिन है।—तीतुस 1:2. (*w12*-E 06/01)

अपने बच्चों को सिखाइए

वह ज़िद्दी था पर उसने बात मान ली

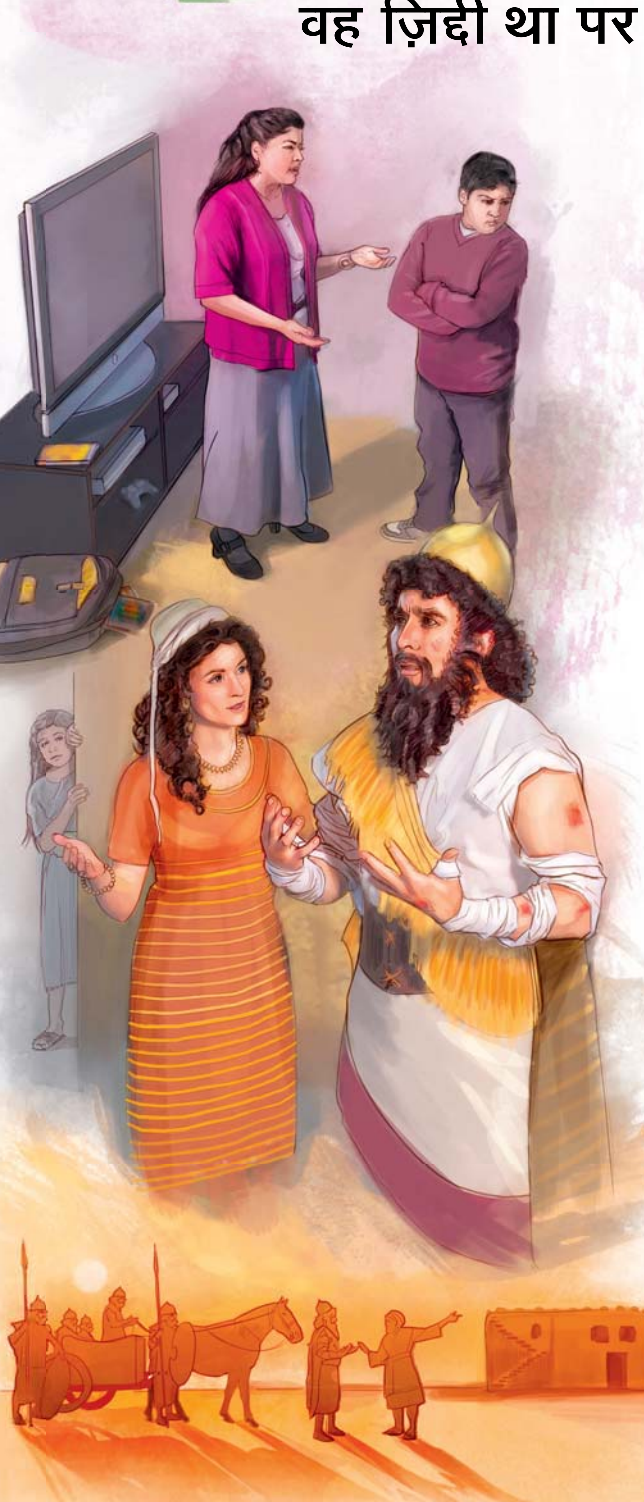

क्या कभी आपने ज़िद की है और बड़ों की बात नहीं मानी?—* शायद आपके मम्मी-पापा ने आपको टीवी पर कोई प्रोग्राम देखने से मना किया हो, लेकिन आपने उनकी बात नहीं सुनी। बाद में हो सकता है, इस बारे में आपको दुख हुआ हो। ऐसा ही एक व्यक्ति था नामान, जिसने पहले बात मानने से मना किया। आइए देखें कि उसके साथ क्या हुआ और कैसे उसने सीखा कि उसे ज़िद्दी नहीं होना चाहिए।

आज से करीब 3,000 साल पहले की बात है। नामान, सीरिया (अराम) देश की सेना का सेनापति था। उसके नीचे कई सैनिक थे, जिन्हें वह हुक्म देता था और वे उसकी बात मानते थे। लेकिन नामान को कोढ़ नाम की एक भयं-कर बीमारी थी। इस वजह से वह बहुत भद्दा दिखता था और शायद उसे बहुत दर्द भी होता था।

नामान के घर में एक छोटी इसराएली लड़की काम करती थी, जो उसकी पत्नी की दासी थी। एक दिन उस लड़की ने अपनी मालकिन से कहा, 'मेरे देश इसराएल में परमेश्‍वर का एक भविष्यवक्‍ता रहता है, जिसका नाम एलीशा है। वह मालिक की बीमारी ठीक कर सकता है।' जब नामान को यह पता चलता है, तो वह एलीशा से मिलने के लिए निकल पड़ता है। वह अपने कई सैनिकों और तोहफों के साथ इसराएल देश जाता है और वहाँ के राजा से मिलकर उसे बताता है कि वह क्यों आया है।

जब एलीशा को नामान के आने की खबर मिलती है, तो वह इसराएल के राजा के पास एक संदेश भेजता है। वह कहता है कि नामान को मेरे पास भेज दो। नामान, एलीशा के घर पहुँचता है। तब एलीशा अपने सेवक को नामान के पास भेजकर सिर्फ इतना कहला देता है कि जाओ, जाकर यरदन

---

* अगर आप बच्चों को यह लेख पढ़कर सुना रहे हैं तो सवाल के बाद जहाँ डैश है, वहाँ थोड़ी देर रुकिए और उन्हें जवाब देने के लिए कहिए।

नदी में सात बार डुबकी लगाओ। ***आपको क्या लगता है, यह सुनकर नामान को कैसा लगा होगा?***—

एलीशा की बात सुनकर नामान को गुस्सा आ जाता है। वह भविष्यवक्ता की बात मानने से साफ मना कर देता है। नामान अपने सैनिकों से कहता है, 'हमारे देश में नहाने के लिए यहाँ से अच्छी नदियाँ हैं।' फिर वह वहाँ से जाने लगता है। ***इस पर पता है उसके सैनिकों ने उससे क्या कहा?***— 'अगर भविष्यवक्ता ने आपसे कोई मुश्किल काम करने को कहा होता, तो क्या आप नहीं करते? फिर जब उसने इतना आसान-सा काम कहा है, तो उसे करने में क्या बुराई है?'

नामान अपने सैनिकों की बात मान लेता है। छः बार यर-दन नदी में डुबकी लगाने के बाद जब वह सातवीं बार डुबकी लगाकर बाहर आता है, तो वह हैरान रह जाता है। वह देखता है कि उसका कोढ़ पूरी तरह ठीक हो गया है। वह एलीशा को धन्यवाद कहने के लिए तुरंत उसके घर की ओर निकल पड़ता है जो वहाँ से करीब 48 किलोमीटर दूर है। नामान एलीशा को महँगे तोहफे देना चाहता है, पर एलीशा उससे कुछ नहीं लेता।

तब नामान, एलीशा से कुछ माँगता है। ***पता है क्या?***— नामान कहता है, 'मुझे दो खच्चरों पर इसराएल की मिट्टी ले जाने दे।' ***पता है, वह मिट्टी क्यों ले जाना चाहता था?***— नामान कहता है कि वह परमेश्वर के लोगों के देश यानी इसराएल की मिट्टी पर परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाना चाहता है। फिर नामान वादा करता है कि वह यहोवा को छोड़ दूसरे किसी ईश्वर की उपासना नहीं करेगा। अब वह पहले की तरह ज़िद्दी नहीं है, बल्कि सच्चे परमेश्वर की बात मानने को तैयार है।

नामान से आप क्या सीख सकते हैं?— अगर आप उसकी तरह ज़िद्दी हैं, तो खुद को बदलिए। ज़िद मत कीजिए और दूसरों की बात मानिए। (*w12*-E 06/01)

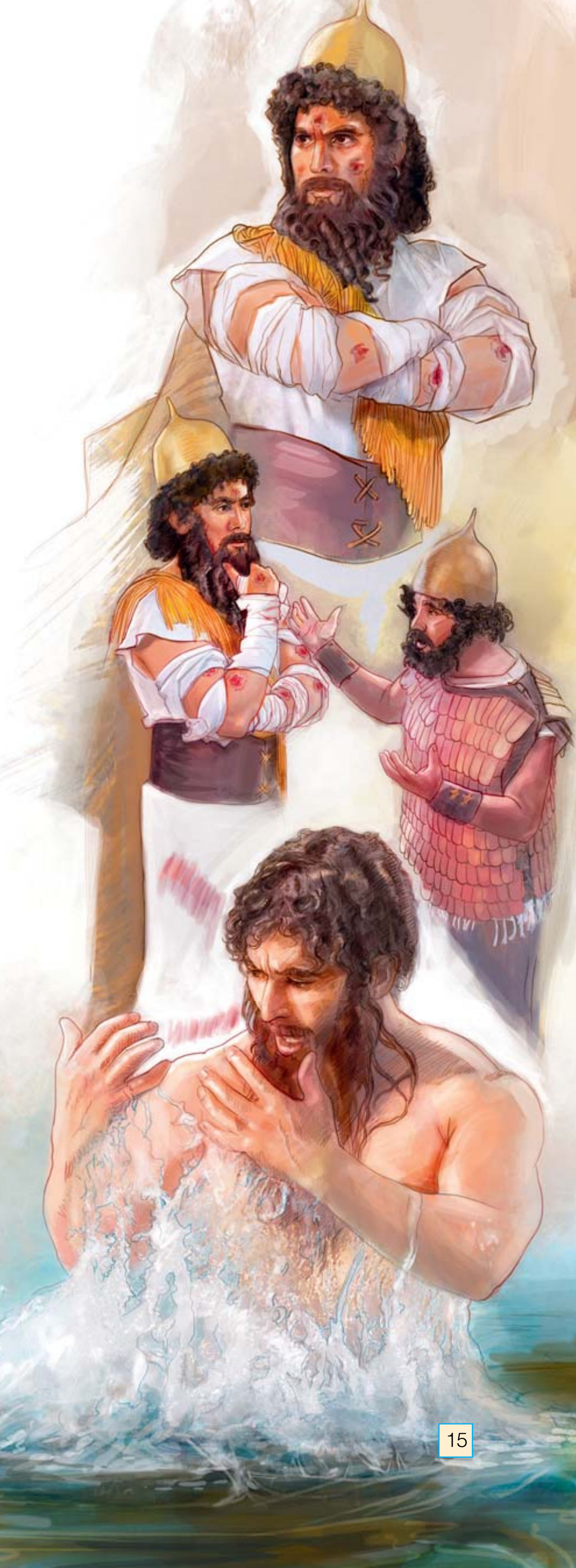

अपनी बाइबल में पढ़िए
2 राजा 5:1-19
लूका 4:27

यीशु की शिक्षाएँ समाज पर कैसा असर डालती हैं?

मसीही जो संदेश देते हैं, वह कैसे नमक की तरह है?

सच्चे मसीही जिस समाज में रहते हैं, उसमें सुधार लाना चाहते हैं। वे कई तरीकों से ऐसा करते हैं, जैसे वे यीशु की यह आज्ञा मानते हैं: "इसलिए जाओ और सब राष्ट्रों के लोगों को मेरा चेला बनना सिखाओ और उन्हें पिता, बेटे और पवित्र शक्ति के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें वे सारी बातें मानना सिखाओ जिनकी मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।"—मत्ती 28:19, 20.

यीशु ने अपने चेलों को ये हिदायतें भी दीं कि उन्हें दुनिया के लिए नमक और रौशनी बनना है। (मत्ती 5:13, 14) यीशु की ये हिदायतें, 'चेला बनाने' की आज्ञा से जुड़ी हैं। वह किस तरह? साथ ही, चेला बनाने के काम का लोगों पर क्या असर हो सकता है?

मसीह का संदेश—जान बचाता है और ज्ञान की रौशनी चमकाता है

नमक, खाने को सड़ने से बचाता है। उसी तरह, यीशु ने अपने चेलों को सारे राष्ट्रों के लोगों को जो संदेश देने के लिए कहा, उससे लोगों की जान बचती है। जो लोग यीशु की शिक्षाएँ मानते और उन्हें लागू करते हैं, वे दुनिया के गिरते नैतिक स्तरों से खुद को बचा पाते हैं। किस तरह? वे सेहत को नुकसान पहुँचाने वाले कामों से, जैसे सिगरेट पीने से दूर रहते हैं। साथ ही वे प्यार, शांति, सहनशीलता, कृपा और भलाई जैसे गुण बढ़ाना सीखते हैं। (गलातियों 5:22, 23) इन गुणों की वजह से वे समाज के लिए उपयोगी बन जाते हैं। जो मसीही जान बचानेवाले इस संदेश को अपने पड़ोसियों को बताते हैं, वे अपने समाज में एक बेहतरीन योगदान दे रहे होते हैं।

यीशु ने अपने चेलों को रौशनी क्यों कहा? जिस तरह

चाँद, सूरज से मिलनेवाली रौशनी को प्रतिबिंबित करता है, उसी तरह मसीह के चेले यहोवा परमेश्‍वर से मिलनेवाली “रौशनी” को प्रतिबिंबित करते हैं। यीशु के दिए संदेश का प्रचार करके और अपने भले कामों के ज़रिए वे इस रौशनी को चमकाते हैं।—1 पतरस 2:12.

यीशु ने एक और तरीके से अपने चेलों और रौशनी के बीच समानता बतायी। उसने कहा: “लोग दीपक जलाकर उसे टोकरी से ढककर नहीं रखते, बल्कि दीपदान पर रखते हैं। इससे घर के सब लोगों को रौशनी मिलती है। उसी तरह तुम्हारी रौशनी लोगों के सामने चमके।” दीपदान पर रखे दीपक की लौ आस-पास के सभी लोगों को दिखायी देती है। उसी तरह सच्चे मसीहियों का प्रचार काम और दूसरे भले काम उनके आस-पास के लोगों को साफ नज़र आने चाहिए। क्यों? अपनी तारीफ कराने के लिए नहीं बल्कि जैसा कि यीशु ने कहा, इन भले कामों को देखकर लोग परमेश्‍वर को महिमा देंगे।—मत्ती 5:14-16.

सामूहिक ज़िम्मेदारी

चेला बनाने की यीशु की आज्ञा, अलग-अलग ईसाई धर्मों के चंद सदस्यों के बलबूते पूरी नहीं हो सकती। यीशु ने अपने सारे चेलों से कहा था कि *“तुम* दुनिया की रौशनी हो” और *“तुम्हारी* रौशनी लोगों के सामने चमके।” इसका मतलब है कि यीशु पर विश्‍वास करनेवाले हर व्यक्‍ति को अपनी “रौशनी” चमकानी है। आज पूरी दुनिया में 235 से भी ज़्यादा देशों में करीब 70 लाख यहोवा के साक्षी हैं। वे यीशु की इस आज्ञा का पालन करना अपनी सामूहिक ज़िम्मेदारी समझते हैं, इसलिए वे अपने पड़ोसियों को यीशु का संदेश सुनाते हैं।

यहोवा के साक्षी जो संदेश देते हैं, उसका विषय क्या है? जब यीशु ने अपने चेलों को प्रचार करने की आज्ञा दी, तो उसने उन्हें सामाजिक या राजनैतिक सुधारों, चर्च और सरकार की एकता या किसी और दुनियावी धारणा का प्रचार करने को नहीं कहा, बल्कि उसने कहा: *“राज की इस खुशखबरी* का सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब राष्ट्रों पर गवाही हो।” (मत्ती 24:14) इसलिए यीशु के निर्देशों को मानते हुए सच्चे मसीही अपने पड़ोसियों को बताते हैं कि परमेश्‍वर का राज ही वह सरकार है, जो शैतान की दुष्ट व्यवस्था को खत्म कर सकता है और एक ऐसी नयी दुनिया ला सकता है जहाँ न्याय का बसेरा होगा।

बाइबल में दीं खुशखबरी की किताबों में यीशु की सेवा से जुड़ी बातें बतायी गयी हैं। जब हम वे किताबें पढ़ते हैं, तो हमारे ध्यान में ऐसी दो खास बातें आती हैं जिनका असर सच्चे मसीहियों के आज के कामों पर पड़ता है। इन दोनों के बारे में अगले लेख में बताया गया है।

(*w12*-E 05/01)

यीशु ने जो संदेश दिया, वह कैसे अंधकार में दीपक की तरह है?

सच्चा विश्‍वासी और ज़िम्मेदार नागरिक कैसे बनें?

यीशु की सेवा की दो खासियतें क्या थीं? पहली, उसने लोगों की ज़िंदगी में बदलाव लाने की कोशिश की, न कि राजनैतिक संगठनों में। जैसे गौर कीजिए कि अपने पहाड़ी उपदेश में उसने किस बात पर ज़ोर दिया। अपने सुननेवालों से यह कहने के पहले कि उन्हें नमक और रौशनी की तरह होना चाहिए, उसने उनसे कहा कि सच्ची खुशी उन लोगों को मिलती है "जिनमें परमेश्‍वर से मार्गदर्शन पाने की भूख है।" फिर उसने कहा: "सुखी हैं वे जो कोमल स्वभाव के हैं, . . . जो दिल के साफ हैं, . . . जो शांति कायम करते हैं।" (मत्ती 5:1-11) यीशु ने अपने चेलों को समझाया कि अपनी सोच और भावनाओं को परमेश्‍वर के स्तरों के मुताबिक ढालना और जी-जान से उसकी सेवा करना कितना ज़रूरी है।

दूसरी खासियत, जब यीशु ने लोगों को तकलीफ से गुज़रते देखा तो करुणा से भरकर उसने उनकी तकलीफ दूर की। लेकिन उसने दुनिया की तकलीफों को जड़ से खत्म नहीं किया। (मत्ती 20:30-34) उसने बीमारों को चंगा किया, लेकिन बीमारी हमेशा के लिए नहीं मिटायी। (लूका 6:17-19) उसने कुचले हुओं को राहत पहुँचायी, लेकिन दुनिया में अन्याय फिर भी होता रहा। उसने भूखों को खाना खिलाया, लेकिन लोग फिर भी भूखमरी के शिकार होते रहे।—मरकुस 6:41-44.

लोगों की ज़िंदगी में बदलाव लाना और तकलीफें कम करना

हालाँकि यीशु लोगों की ज़िंदगी में बदलाव लाया और उसने उनकी तकलीफें भी कम कीं, लेकिन उसने संगठनों को सुधारने या तकलीफों को *जड़ से मिटाने* की कोशिश नहीं की। क्यों? क्योंकि यीशु जानता था कि परमेश्‍वर भविष्य में अपने राज के ज़रिए सारी इंसानी सरकारों को खत्म कर देगा और सारी दुख-तकलीफों की वजह भी मिटा देगा। (लूका 4:43; 8:1) इसलिए जब एक बार चेलों ने उससे गुज़ारिश की कि वह बीमारों को चंगा करने में और समय बिताए, तो उसने उनसे कहा: "आओ हम कहीं और आस-पास के दूसरे कसबों में जाएँ, ताकि मैं वहाँ भी प्रचार कर सकूँ, क्योंकि मैं इसी वजह से निकला हूँ।" (मरकुस 1:32-38) यीशु ने कई लोगों की तकलीफें दूर कीं, लेकिन उसने सबसे ज़्यादा अहमियत परमेश्‍वर के वचन के प्रचार और सिखाने के काम को दिया।

आज यहोवा के साक्षी अपने प्रचार काम के ज़रिए यीशु की मिसाल पर चलने की कोशिश करते हैं। वे ज़रूरतमंद लोगों को कारगर मदद देकर उनकी तकलीफ *कम* करते हैं। लेकिन साक्षी दुनिया में होनेवाले अन्याय को *पूरी तरह से खत्म* करने की कोशिश नहीं करते। वे विश्‍वास करते हैं कि परमेश्‍वर का राज इंसानों की सारी दुख-तकलीफों को हमेशा के लिए मिटा देगा। (मत्ती 6:10) जैसा यीशु ने किया था, वे भी लोगों की *ज़िंदगी* में बदलाव लाने की कोशिश करते हैं, न कि राजनैतिक *संगठनों* में। ऐसा करना सही है, क्योंकि इंसान की समस्याओं की खास वजह, राजनीति नहीं बल्कि गिरते नैतिक स्तर हैं।

> यीशु ने लोगों की ज़िंदगी में बदलाव लाने की कोशिश की, न कि राजनैतिक संगठनों में

ज़िम्मेदार नागरिक

यहोवा के साक्षी यह भी समझते हैं कि सच्चे मसीही होने के नाते उन्हें एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए। इसलिए वे सरकारी अधिकारियों का आदर-सम्मान करते हैं। अपने साहित्य और प्रचार काम के ज़रिए वे अपने पड़ोसियों को देश का कानून मानने का बढ़ावा देते हैं। लेकिन जब सरकार की तरफ से कोई ऐसी आज्ञा मिलती है जो परमेश्‍वर की आज्ञा के बिलकुल खिलाफ होती है, तो साक्षी परमेश्‍वर

यहोवा के साक्षी समझते हैं कि उन्हें एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए

की आज्ञा को ज़्यादा अहमियत देते हैं। वे "इंसानों के बजाय परमेश्‍वर को अपना राजा जानकर उसकी आज्ञा" मानते हैं।—प्रेषितों 5:29; रोमियों 13:1-7.

यहोवा के साक्षी अपने इलाके में लोगों से मिलकर उन्हें मुफ्त में बाइबल की शिक्षा देते हैं। इस शिक्षा की वजह से लाखों लोगों ने अपनी ज़िंदगी में बदलाव किए हैं। हर साल, हज़ारों-हज़ार लोग अपनी बुरी आदतों से छुटकारा पाते हैं। जैसे वे सिगरेट या शराब पीना, ड्रग्स लेना, जुआ खेलना या लैंगिक अनैतिकता छोड़ देते हैं। उन्होंने बाइबल सिद्धांतों को अपनी ज़िंदगी में लागू करना सीख लिया है, जिस वजह से वे शुद्ध ज़िंदगी जीने लगे हैं और एक ज़िम्मेदार नागरिक बन गए हैं।

इसके अलावा, बाइबल की शिक्षा लेने से परिवार के लोग एक-दूसरे का गहरा आदर करना सीखते हैं और उनके बीच अच्छी बातचीत भी होने लगती है। जैसे पति-पत्नी के बीच, माता-पिता और बच्चों के बीच, इतना ही नहीं बच्चे भी आपस में एक-दूसरे के साथ इज़्ज़त से बात करने लगते हैं। इससे पारिवारिक रिश्ते मज़बूत बनते हैं और मज़बूत परिवारों से मज़बूत समाज का निर्माण होता है।

इन लेखों में दिए मुद्दों पर गौर करने के बाद यह बात साफ हो जाती है कि सच्चे मसीही ज़िम्मेदार नागरिक होते हैं। जब वे यीशु की आज्ञा मानकर दुनिया के लिए नमक और रौशनी की तरह बनते हैं, तो वे अपनी इस भूमिका को अच्छी तरह निभा पाते हैं।

जो लोग मसीह के इन निर्देशनों को मानते हैं, वे खुद को और अपने परिवारों को फायदा पहुँचाते हैं, साथ ही अपने समाज को भी। अगर आप इस बारे में बाइबल से शिक्षा पाना चाहते हैं, तो आपके इलाके के यहोवा के साक्षियों को आपकी मदद करने में बेहद खुशी होगी।*

(*w12*-E 05/01)

* आप चाहें तो www.jw.org पर भी यहोवा के साक्षियों से संपर्क कर सकते हैं।

दोबारा भरोसा कायम करना

स्टीव*: "मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि जेसिका मुझसे बेवफाई करेगी। मेरा भरोसा पूरी तरह टूट गया। मैं बता नहीं सकता कि मेरे लिए उसे माफ करना कितना मुश्किल था।"

जेसिकाः "स्टीव का मुझ पर से भरोसा उठ जाना वाजिब था। मुझे अपने किए पर बहुत पछतावा था, लेकिन स्टीव को इसका यकीन दिलाने में मुझे सालों लग गए।"

पति-पत्नी में से अगर कोई व्यभिचार करता है, तो बाइबल के मुताबिक निर्दोष साथी चाहे तो तलाक ले सकता है।# (मत्ती 19:9) स्टीव ने फैसला किया कि वह तलाक नहीं लेगा। उन दोनों ने पक्का इरादा कर लिया कि वे अपने रिश्ते को टूटने नहीं देंगे। लेकिन उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि अपने रिश्ते को बचाने का मतलब सिर्फ एक छत के नीचे रहना नहीं है। क्यों? क्योंकि शादीशुदा ज़िंदगी में खुशी बनाए रखने के लिए पति-पत्नी का एक-दूसरे पर भरोसा करना बेहद ज़रूरी है। जेसिका के व्यभिचार की वजह से उनके बीच का भरोसा पूरी तरह खत्म हो गया था। अब उन्हें अपने रिश्ते को बहाल करने के लिए काफी मेहनत करनी थी।

यह सच है कि व्यभिचार पति-पत्नी के रिश्ते में गहरी दरार डाल देता है। लेकिन अगर आप इसके बावजूद अपने रिश्ते को बरकरार रखने की कोशिश कर रहे हैं, तो यह याद रखना अच्छा होगा कि इसमें कई मुश्किलें आएँगी, खासकर शुरूआत के महीनों में। लेकिन हिम्मत मत हारिए, आपकी मेहनत ज़रूर रंग लाएगी! आप एक-दूसरे का भरोसा दोबारा कैसे जीत सकते हैं? बाइबल में दी बुद्धि-भरी सलाह से आपको मदद मिल सकती है। आगे दिए चार सुझावों पर ध्यान दीजिए।

1 एक-दूसरे के साथ ईमानदारी से पेश आइए। यीशु मसीह के एक शिष्य, पौलुस ने लिखाः "इसलिए, जब तुमने झूठ को अपने से दूर किया है, तो तुममें से हरेक . . . सच बोले।" (इफिसियों 4:25) झूठ बोलने, बातें छिपाने या चुप रहने से भी भरोसा खत्म हो जाता है। इसलिए ज़रूरी है कि आप दोनों एक-दूसरे से खुलकर बात करें और सच बोलें।

शुरू-शुरू में हो सकता है कि आप दोनों इस विषय पर बात

---

* नाम बदल दिए गए हैं।

\# ऐसे हालात में तलाक का फैसला किस बिनाह पर करें, इस बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए *सजग होइए!* पत्रिका के मई 8, 1997, पेज 26 और अगस्त 8, 1995, पेज 10 और 11 (अँग्रेज़ी) देखिए।

करना बिलकुल पसंद न करें। लेकिन एक-न-एक दिन आपको खुलकर बात करनी ही होगी कि आखिर यह सब हुआ कैसे। आप शायद हर छोटी-छोटी बात पर चर्चा न करना चाहें, लेकिन चुप्पी साध लेना भी बुद्धिमानी नहीं होगी। जेसिका कहती है, "शुरू-शुरू में मेरे लिए इस बारे में बात करना बहुत मुश्किल होता था और मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। मुझे अपने किए पर बहुत पछतावा था और मैं उस बात को भूल जाना चाहती थी।" लेकिन इस तरह बात को टालने से समस्याएँ उठने लगीं। क्यों? स्टीव कहता है, "जेसिका अपनी गलती के बारे में बात नहीं करना चाहती थी, इसलिए मुझे हमेशा उस पर शक होता था।" बाद में जेसिका को भी एहसास हुआ कि वह जो कर रही है, सही नहीं है। वह कहती है, "मैं स्टीव से अपनी गलती के बारे में बात नहीं कर रही थी, इसलिए हमारा रिश्ता सुधर नहीं पा रहा था।"

यह सच है कि ऐसे नाज़ुक विषय पर बात करने से काफी तकलीफ होती है। दिया के पति प्रेम का अपनी सेक्रेटरी के साथ नाजायज़ संबंध थे। दिया कहती है, "मेरे मन में लाखों सवाल उठते थे। यह कैसे हुआ? क्यों हुआ? उन दोनों के बीच क्या बातचीत होती थी? मैं यह सब सोच-सोचकर परेशान होती थी और अपने पति से सवाल करती थी। वक्त के गुज़रते मैं और भी सवाल करने लगी।" प्रेम कहता है, "इस बारे में बात करते वक्त कभी-कभी दिया और मेरे बीच गहमा-गहमी हो जाती थी। लेकिन बाद में हम एक-दूसरे से माफी माँग लेते थे। खुलकर बात करने से हम एक-दूसरे के करीब आ पाए।"

बेवफाई के बारे में बात करते वक्त आप तनाव को कुछ हद तक कैसे कम कर सकते हैं? याद रखिए कि बात करने का मकसद अपने साथी को सज़ा देना नहीं है, बल्कि यह जानना है कि आप इस हादसे से क्या सबक सीख सकते हैं और अपने रिश्ते को मज़बूत कैसे बना सकते हैं। चल-सू और उसकी पत्नी मी-यंग ने ऐसा ही किया। चल-सू ने व्यभिचार किया था। वह कहता है, "मैंने पाया कि मैं अपनी नौकरी में बहुत व्यस्त रहता था। मैं दूसरों को खुश करने और उनकी उम्मीदों पर खरा उतरने की कुछ ज़्यादा ही कोशिश करता था। मैं दूसरों के साथ ज़्यादा समय बिताता था, इसलिए अपनी पत्नी के साथ बिताने के लिए मेरे पास बहुत कम वक्त बचता था।" यह समझ जाने के बाद कि चल-सू के बहक जाने की वजह क्या थी, उन दोनों ने अपनी ज़िंदगी में ज़रूरी बदलाव किए और इस तरह उनका रिश्ता दोबारा मज़बूत हो गया।

इसे आज़माइए: अगर बेवफाई आपने की है, तो सफाई मत दीजिए, ना ही अपने साथी पर इलज़ाम लगाइए। अपनी गलती कबूल कीजिए और यह भी मानिए कि आपकी हरकतों से आपके साथी को दुख पहुँचा है। अगर बेवफाई आपके साथी ने की है, तो उससे बातचीत करते वक्त चीखने-चिल्लाने या गंदी भाषा का इस्तेमाल करने से दूर रहिए। तब आपका साथी आपसे खुलकर बात करने की हिम्मत जुटा पाएगा।—इफिसियों 4:32.

2 **मिलकर कोशिश कीजिए।** बाइबल कहती है: "एक से दो अच्छे हैं।" क्यों? "क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है। क्योंकि यदि उन में से एक गिरे, तो दूसरा उसको उठाएगा।" (सभोपदेशक 4:9, 10) यह सिद्धांत खास-कर उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकता है जो अपने रिश्ते में दोबारा भरोसा कायम करने की कोशिश कर रहे हैं।

अगर आप मिलकर काम करें, तो आप एक-दूसरे का भरोसा जीतने में कामयाब हो सकते हैं। लेकिन इसके लिए *दोनों* को मेहनत करनी होगी। अगर एक इंसान अकेला ही कोशिश करे, तो वह अपने लिए और परेशानी खड़ी कर रहा होगा। आपको यह याद रखना चाहिए कि आप दोनों एक ही गाड़ी के पहिए हैं।

स्टीव और जेसिका को साथ काम करने से कामयाबी मिली। जेसिका कहती है, "हमें वक्त तो लगा, लेकिन हमने अपने रिश्ते को सुधारने के लिए मिलकर काम करना नहीं छोड़ा। मैंने ठान लिया था कि मैं उन्हें दोबारा कभी ऐसा दुख नहीं पहुँचाऊँगी। कभी-कभी स्टीव कुछ ऐसा कह देते थे जो मुझे बुरा लगता था, लेकिन उन्होंने भी फैसला कर लिया था कि वे हमारे रिश्ते को टूटने नहीं देंगे। मैं हर रोज़ अलग-अलग तरीकों से यह ज़ाहिर करने की कोशिश करती कि मैं कभी उन्हें धोखा नहीं दूँगी और स्टीव अकसर मुझे यकीन दिलाते कि वे मुझसे प्यार करते हैं। इसके लिए मैं हमेशा उनका एहसान मानूँगी।"

इसे आज़माइए: ठान लीजिए कि आप दोनों साथ मिल-कर अपने रिश्ते में भरोसा दोबारा कायम करेंगे।

3 **पुरानी आदतें छोड़ दीजिए और नयी आदतें डालिए।** एक बार यीशु ने अपने सुननेवालों को शादी के बाहर यौन-संबंध रखने के बारे में खबरदार करने के बाद कहा: "अगर तेरी दायीं आँख तुझसे पाप करवा रही है, तो उसे नोंच-कर निकाल दे और दूर फेंक दे।" (मत्ती 5:27-29) अगर आपने अपने साथी को धोखा दिया है, तो क्यों न आप अपनी ऐसी हरकतों या रवैयों को पहचानें जो आपके शादी के बंधन को नुकसान पहुँचा सकते हैं और उन्हें नोंचकर दूर फेंक दें।

ज़ाहिर है कि जिसके साथ आपने व्यभिचार किया है, उससे आपको पूरी तरह नाता तोड़ना होगा।* (नीतिवचन 6:32; 1 कुरिंथियों 15:33) प्रेम ने यही किया। उस दूसरी औरत से दूर रहने के लिए उसने अपनी शिफ्ट बदलवा ली और अपना मोबाइल नंबर भी बदल दिया। जब इन कोशिशों के बावजूद वह कामयाब नहीं हो पाया, तो उसने वह नौकरी ही छोड़ दी। उसने मोबाइल फोन रखना भी छोड़ दिया। ज़रूरत पड़ने पर वह सिर्फ अपनी पत्नी का मोबाइल इस्तेमाल करता था। उसने अपनी पत्नी का भरोसा दोबारा जीतने का पक्का इरादा कर लिया था। क्या इतनी ज़हमत उठाने का कोई फायदा हुआ? उसकी पत्नी दिया कहती है, "इस बात को अब छः साल हो चुके हैं। मुझे कभी-कभार अब भी इस बात का डर लगता है कि वह औरत इनसे संपर्क करने की कोशिश करेगी। लेकिन अब मुझे पूरा भरोसा है कि प्रेम उसके झाँसे में नहीं आएँगे।"

इसके अलावा, शायद आपको अपनी शख्सियत में भी कुछ बदलाव करने पड़ें। हो सकता है कि आप दूसरों के साथ आशिकाना अंदाज़ में पेश आते हों या रोमानी रिश्ते रखने के ख्वाब देखते हों। अगर ऐसा है, तो अपनी 'पुरानी शख्सियत को उसकी आदतों समेत उतार फेंकिए।' पुरानी आदतें छोड़ दीजिए और ऐसी आदतें डालिए जिनसे आप अपने साथी का भरोसा दोबारा जीत सकें। (कुलुस्सियों 3:9, 10) क्या आप अपने साथी को खुलकर प्यार जताते हैं? हो सकता है कि आपको ऐसा करने में झिझक महसूस हो, लेकिन अपने साथी को यकीन दिलाइए कि आप उससे प्यार करते हैं। स्टीव कहता है, "जेसिका अकसर मुझे प्यार से छूती और कई बार मुझसे कहती कि वह मुझसे प्यार करती है।"

यह भी अच्छा होगा कि कुछ समय के लिए आप अपने साथी को अपनी दिनचर्या के बारे में हर बात बताएँ। मी-यंग कहती है, "चल-सू मुझे यकीन दिलाना चाहते थे कि वे मुझसे कुछ नहीं छिपा रहे। इसलिए वे याद से मुझे हर दिन बताते थे कि उन्होंने क्या-क्या किया, यहाँ तक कि छोटी-से-छोटी बात भी।"

इसे आज़माइए: एक-दूसरे से पूछिए कि क्या करने से आपके रिश्ते में भरोसा दोबारा कायम हो सकता है। उन बातों को लिख लीजिए और उन पर अमल कीजिए। इसके अलावा, कुछ ऐसे काम साथ मिलकर कीजिए जिनमें आप दोनों को मज़ा आता हो। ऐसा नियमित तौर पर करते रहिए।

4 पिछली बातें भूलकर अपने रिश्ते को नए सिरे से शुरू कीजिए। बहुत जल्द इस नतीजे पर मत पहुँचिए कि सबकुछ पहले जैसा हो गया है। नीतिवचन 21:5 में यह चेतावनी दी गयी है: "उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।" आपको अपने साथी का भरोसा एक बार फिर जीतने में समय लगेगा। शायद इसमें सालों लग जाएँ।

अगर आपके साथी ने बेवफाई की है, तो यह मानकर चलिए कि उसे माफ करने में आपको वक्त लगेगा। मी-यंग कहती है: "पहले मैं सोचती थी कि अगर पति ने व्यभिचार किया है तो पत्नी को उसे माफ कर देना चाहिए। मैं समझ नहीं पाती थी कि एक पत्नी अपने पति से इतने दिनों तक कैसे नाराज़ रह सकती है। लेकिन जब मेरे साथ ऐसा हुआ, तब मुझे एहसास हुआ कि ऐसे हालात में अपने पति को माफ करना कितना मुश्किल होता है।" अपने साथी को माफ करना और उस पर दोबारा भरोसा करना, धीरे-धीरे ही मुमकिन है।

लेकिन याद रखिए कि सभोपदेशक 3:1-3 के मुताबिक "चंगा [होने] का भी समय" है। हो सकता है, शुरू-शुरू में आप सोचें कि अपनी भावनाओं को खुलकर ज़ाहिर न करना ही अच्छा है। लेकिन अगर आप दिल बात कभी नहीं बताएँगे, तो आप दोनों के बीच दोबारा भरोसा कायम नहीं हो पाएगा। अपने रिश्ते में आयी दरार को भरने के लिए अपने साथी को माफ कीजिए और अपने विचार और भावनाएँ उसे बताकर ज़ाहिर कीजिए कि आपने उसे माफ कर दिया है। अपने साथी को भी बढ़ावा दीजिए कि वह आपको अपनी खुशियों और चिंताओं के बारे में बताए।

बीती बातों के बारे में सोच-सोचकर अपने साथी के लिए मन में कड़वाहट मत पालिए। ऐसी भावनाएँ दिल से निकालने की कोशिश कीजिए। (इफिसियों 4:32) इसके लिए आपको परमेश्वर की मिसाल से मदद मिल सकती है। जब पुराने ज़माने के इसराएल देश के लोगों ने उसकी उपासना करनी छोड़ दी, तो परमेश्वर को बहुत दुख पहुँचा। यहोवा परमेश्वर ने खुद की तुलना एक ऐसे पति से की जिसकी पत्नी ने उसे धोखा दिया हो। (यिर्मयाह 3:8, 9; 9:2) इसके बावजूद उसने कहा, "मैं सर्वदा क्रोध न रखे रहूंगा।" (यिर्मयाह 3:12) जब इसराएल के लोगों ने सच्चा पश्चाताप दिखाया और उसके पास लौट आए, तो उसने उन्हें माफ कर दिया।

अगर आप इन सुझावों को लागू करने के लिए कड़ी मेह-

* अगर कुछ समय के लिए आपको उससे मिलना-जुलना पड़ता है, जैसे काम के सिलसिले में, तो तभी ऐसा कीजिए जब यह बेहद ज़रूरी हो। उससे अकेले में मत मिलिए और अपने साथी को आपकी मुलाकात की पूरी खबर दीजिए।

नत करें, तो एक दिन ऐसा आएगा जब आप दोनों को यकीन हो जाएगा कि आपका रिश्ता बरकरार रहेगा। इसके बाद आप अपना ध्यान अपनी शादी को बचाने पर नहीं, बल्कि साथ मिलकर दूसरे काम करने पर लगा पाएँगे। लेकिन फिर भी थोड़ी सावधानी बरतिए और बीच-बीच में अपने रिश्ते को जाँचते रहिए। छोटी-मोटी अड़चनें आ सकती हैं, लेकिन इन्हें मिलकर पार कीजिए और एक-दूसरे को अपनी वफादारी का यकीन दिलाते रहिए।—गलातियों 6:9.

इसे आज़माइए: यह उम्मीद मत कीजिए कि आपका रिश्ता बिलकुल पहले जैसा हो जाएगा, बल्कि यह सोचिए कि आप एक नए रिश्ते की शुरूआत कर रहे हैं और इस रिश्ते को मज़बूत बनाइए।

आप कामयाब हो सकते हैं

अगर कभी आपको लगता है कि आपकी कोशिशें कामयाब नहीं हो रही हैं, तो यह याद रखिए कि शादी के रिश्ते की शुरूआत परमेश्वर ने की है और इसलिए आपकी शादी को कामयाब बनाने में वह मदद कर सकता है। (मत्ती 19:4-6) इस लेख में जिन पति-पत्नियों का ज़िक्र किया गया है, उन सभी ने बाइबल की बुद्धि-भरी सलाह को लागू किया और वे अपनी शादी को बरकरार रख पाए।

स्टीव और जेसिका की ज़िंदगी में इस तूफान को आए 20 साल से भी ज़्यादा समय हो चुका है। वे अपने रिश्ते को बरकरार रखने में कामयाब हुए। स्टीव कहता है, "जब हमने यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करना शुरू किया, तब हमारी शादीशुदा ज़िंदगी में ज़्यादा सुधार हुआ। हमें जो मदद दी गयी वह वाकई अनमोल थी। इस वजह से हम उस मुश्किल दौर को पार कर पाए।" जेसिका कहती है: "परमेश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि हम उस बुरे वक्त से उबर पाए। हमने साथ मिलकर बाइबल का अध्ययन किया और अपने रिश्ते को सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की, जिसकी वजह से आज हमारी शादीशुदा ज़िंदगी बहुत खुशहाल है।" (*w12*-E 05/01)

खुद से पूछिए . . .

- *मेरे साथी के व्यभिचार करने के बावजूद मैंने क्यों हमारे रिश्ते को बरकरार रखने का फैसला किया था?*
- *मेरे साथी में कौन-से अच्छे गुण हैं?*
- *शादी से पहले जब हम दोनों मिलते थे, तो मैं किन छोटे-छोटे तरीकों से प्यार ज़ाहिर करता था? मैं उसी तरह प्यार कैसे दिखा सकता हूँ?*

सुनहरा भविष्य कैसे पाएँ?

ज़िंदगी में कामयाब होने के लिए आप क्या कर सकते हैं? हमारे अंदर यह काबिलीयत है कि हम दूर की सोच सकते हैं। इसलिए कामयाब होने के लिए ज़रूरी है कि हम इस बेहतरीन काबिलीयत का इस्तेमाल करके फैसले लें।

लेकिन सभी इस बात से सहमत होंगे कि हमारे लिए ऐसे फैसले लेना मुश्किल होता है जिनसे हमें ज़िंदगी-भर फायदा हो। क्यों? क्योंकि ज़्यादातर लोग चाहते हैं कि उन्हें तुरंत नतीजे मिलें। उदाहरण के लिए, शायद आपको यह एहसास हो कि बाइबल की सलाह लागू करने से परिवार में रिश्ते मज़बूत होते हैं। (इफिसियों 5:22–6:4) लेकिन इसके लिए आपको नियमित तौर पर अपने परिवार के साथ वक्त बिताना होगा और नौकरी-धंधे या मनोरंजन में हद-से-ज़्यादा वक्त बिताने से खुद को रोकना होगा। जीवन में ऐसे कई मुकाम आएँगे जब आपको यह चुनाव करना होगा कि आप पल-भर की खुशी चाहते हैं या लंबे समय की कामयाबी। सही चुनाव करने के लिए अच्छा होगा कि आप नीचे दिए चार मुद्दों पर ध्यान दें।

1 नतीजों के बारे में अच्छी तरह सोचिए

फैसला करने से पहले अच्छी तरह सोच लीजिए कि उसके क्या-क्या अंजाम हो सकते हैं। बाइबल सलाह देती है: "चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है।" (नीतिवचन 22:3) अगर आप ईमानदारी से अपने फैसले के नतीजों पर ध्यान दें, तो आप ऐसा कोई कदम नहीं उठाएँगे जिससे आपको नुकसान हो सकता है। दूसरी तरफ जब आप देखेंगे कि अपने फैसले से आपको आगे चलकर कितना फायदा होगा, तो उसे लागू करने का आपका इरादा और मज़बूत हो जाएगा।

खुद से ये पूछिए: 'मैं जो फैसला करने की सोच रहा हूँ, अगले एक साल, 10 साल या 20 साल में उसका क्या नतीजा होगा? इस फैसले का आगे चलकर कहीं मेरी सेहत या मेरे दिलो-दिमाग पर बुरा असर तो नहीं पड़ेगा? इस फैसले का मेरे परिवार या मेरे दोस्तों-रिश्तेदारों पर क्या असर होगा?' सबसे ज़रूरी सवाल है: 'मेरे इस फैसले से क्या परमेश्वर को खुशी होगी और उसके साथ मेरा जो रिश्ता है वह मज़बूत होगा या कमज़ोर?' बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गयी है, इसलिए उसकी मदद से आप यह जान पाएँगे कि क्या बात परमेश्वर को खुश करती है, साथ ही उन खतरों को भी भाँप सकेंगे, जिनके बारे में शायद आप वैसे न जान पाएँ।—नीतिवचन 14:12; 2 तीमुथियुस 3:16.

2 दूसरों की देखा-देखी फैसला मत कीजिए

कुछ लोग दूसरों की देखा-देखी फैसले करते हैं। लेकिन ज़रूरी नहीं कि सब लोग जिस तरह की ज़िंदगी जीते हैं, उस तरह की ज़िंदगी से आपको भी खुशी मिले। हमारे सामने अलग-अलग रास्ते होते हैं, कोई भी रास्ता चुनने से पहले देखिए कि वह आपको कहाँ ले जाएगा। उदाहरण के लिए, नैटली* बताती है: "मैं घर बसाकर एक खुशहाल ज़िंदगी जीना चाहती थी। लेकिन मैं जिस तरह की ज़िंदगी जी रही थी, उससे मेरा यह ख्वाब पूरा होना नामुमकिन था। हालाँकि कॉलेज में मेरे सभी दोस्त पढ़ाई-लिखाई में होशियार थे, मगर वे हमेशा अपनी ज़िंदगी में गलत फैसले लेते थे। वे अपने बॉयफ्रेंड या गर्लफ्रेंड बदलते रहते थे। उनकी देखा-देखी मैंने भी कई बॉयफ्रेंड बदले, जिस वजह से मेरा दिल कई बार टूटा।"

कुछ समय बाद नैटली यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन करने लगी। वह कहती है, "मैंने देखा कि साक्षी पति-पत्नियों के बीच गहरा प्यार है और उनके नौजवान हमेशा खुश रहते हैं। धीरे-धीरे मैंने भी अपने जीने का तरीका और स्तर बदला, जो मेरे लिए आसान नहीं था।" इसका क्या नतीजा हुआ? वह आगे कहती है, "मैं हमेशा से एक ऐसे इंसान से शादी करना

* इस लेख में नाम बदल दिए गए हैं।

चाहती थी जिसकी मैं दिल से इज़्ज़त कर सकूँ। कुछ समय बाद मुझे ऐसा ही एक व्यक्ति मिला और हमने शादी कर ली। उसके और मेरे धार्मिक विश्वास एक समान हैं। मैंने सोचा भी नहीं था कि मेरी शादीशुदा ज़िंदगी इतनी खुशहाल होगी, लेकिन परमेश्वर की आशीष से यह मुमकिन हो पाया है।"

3 अपने भविष्य को ध्यान में रखिए

सच्ची कामयाबी पाने के लिए ज़रूरी है कि आप सिर्फ अभी का फायदा न देखें, बल्कि भविष्य के बारे में आपके मन में एक साफ तसवीर हो और एक योजना भी कि आप उस भविष्य को कैसे हासिल करेंगे। (नीतिवचन 21:5) लेकिन यह मत सोचिए कि हमारी ज़िंदगी सिर्फ 70 या 80 साल की है। बाइबल में परमेश्वर ने वादा किया है कि वह हमें हमेशा की ज़िंदगी देगा। इसलिए उस ज़िंदगी को अपनी मन की आँखों से देखिए और उसे हकीकत बनाने की सोचिए।

बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने यीशु के फिरौती बलिदान का इंतज़ाम किया है, जिस पर विश्वास करने से एक इंसान हमेशा की ज़िंदगी पा सकता है। (मत्ती 20:28; रोमियों 6:23) परमेश्वर वादा करता है कि वह इंसानों और पृथ्वी के लिए ठहराए अपने मकसद को बहुत जल्द पूरा करेगा। वह इस धरती को एक खूबसूरत बाग में तबदील कर देगा और उससे प्यार करनेवाले वहाँ हमेशा की ज़िंदगी का मज़ा लेंगे। (भजन 37:11; प्रकाशितवाक्य 21:3-5) ऐसा भविष्य आप भी पा सकते हैं, बशर्ते आप हमेशा उसे ध्यान में रखकर फैसला करें।

4 अपने लक्ष्य को पाने के लिए मेहनत कीजिए

परमेश्वर ने जिस भविष्य का वादा किया है, उसे पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं? सबसे पहले परमेश्वर के बारे में ज्ञान लीजिए। (यूहन्ना 17:3) बाइबल का सही ज्ञान लेने से परमेश्वर के वादे पर आपका विश्वास मज़बूत हो जाएगा। इस विश्वास से आपको अपनी ज़िंदगी में ज़रूरी बदलाव करने की ताकत मिलेगी ताकि आप परमेश्वर की मंज़ूरी पा सकें।

माइकल के उदाहरण पर गौर कीजिए। वह कहता है, "12 साल की उम्र से ही मैं शराब पीने लगा और एक गैंग में भी शामिल हो गया। मुझे नहीं लगता था कि मैं 30 साल की उम्र तक भी जी पाऊँगा। मैं ज़िंदगी से निराश हो चुका था और मुझे खुद पर गुस्सा आता था। मैंने कई बार आत्म-हत्या करने की कोशिश की। मुझे लगता था कि कहीं तो कोई उम्मीद होगी, लेकिन कहाँ, यह मुझे पता नहीं था।" जब माइकल हाई स्कूल में था, तब उसके गैंग के एक साथी ने यहोवा के साक्षियों के साथ बाइबल का अध्ययन शुरू किया। यह देखकर माइकल भी उनके साथ अध्ययन करने लगा।

माइकल ने बाइबल से जो सीखा, उससे भविष्य के बारे में उसका नज़रिया बदल गया। वह कहता है, "मैंने सीखा कि पृथ्वी को दोबारा एक खूबसूरत बगीचे का रूप दिया जाएगा और वहाँ लोग अमन-चैन की ज़िंदगी जीएँगे। मैं ऐसी ही एक ज़िंदगी जीने के बारे में सोचने लगा। मैंने ठान लिया कि मैं यहोवा के साथ एक अच्छा रिश्ता बनाऊँगा, लेकिन इसके बावजूद मुझसे कई बार गलतियाँ होती रहीं। बाइबल का अध्ययन शुरू करने के बाद भी मैं कभी-कभी शराब पीकर धुत्त हो जाता था। एक बार तो एक लड़की के साथ मैंने गलत संबंध भी बना लिए।"

वह अपनी कमज़ोरियों पर कैसे जीत हासिल कर पाया? वह कहता है: "मेरे बाइबल शिक्षक ने मुझे रोज़ाना बाइबल पढ़ने और ऐसे लोगों के साथ संगति करने को कहा जो परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं। गैंग के साथियों के साथ मेरा अब भी मेल-जोल था, वे मेरे लिए परिवार की तरह थे। लेकिन एक साफ-सुथरी ज़िंदगी जीने के लिए ज़रूरी था कि मैं उनके साथ अपने सारे रिश्ते तोड़ दूँ और मैंने यही किया।"

माइकल का सबसे बड़ा लक्ष्य था, अपनी ज़िंदगी को परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक ढालना। इसे हासिल करने के लिए उसने छोटे-छोटे लक्ष्य रखे और आध्यात्मिक बातों को अहमियत दी। आप भी ऐसा कर सकते हैं। लिखिए कि आपका सबसे बड़ा लक्ष्य क्या है, फिर यह कि उसे पाने के लिए आपको कौन-से कदम उठाने पड़ेंगे। साथ ही, उन लोगों को अपने लक्ष्य के बारे में बताइए जो उसे पाने में आपकी मदद कर सकते हैं। उनसे कहिए कि वे आपको बताते रहें कि आप कितनी तरक्की कर रहे हैं।

परमेश्वर के बारे में सीखने और उसके निर्देशनों को लागू करने में देर मत कीजिए। परमेश्वर और उसके वचन के लिए प्यार बढ़ाने के लिए तुरंत कदम उठाइए। जो व्यक्ति बाइबल सिद्धांतों को लागू करता है, उसके बारे में परमेश्वर का वचन कहता है: "जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।" —भजन 1:1-3.

(*w12*-E 05/01)

भूत-विद्या में
क्या बुराई है?

बारबरा* को जवानी से अजीब-अजीब सपने दिखायी देते थे और तरह-तरह की आवाज़ें सुनायी देती थीं। उसे यकीन हो गया कि वह अपने मरे हुए रिश्तेदारों से बात कर सकती है। वह और उसका पति योआकिम जादू-टोने की किताबें पढ़ने लगे और दोनों ही टैरो कार्ड देखकर भविष्य बताने में माहिर हो गए। टैरो कार्ड से उन्हें पता चला कि उनके हाथ खूब पैसा लगनेवाला है और वाकई उन्हें बिज़नेस में बहुत मुनाफा हुआ। एक दिन टैरो कार्ड ने उन्हें खबरदार किया कि खतरनाक लोग उनके घर आनेवाले हैं और बताया कि उनसे बचने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए।

हालाँकि कुछ लोगों को जादू-टोने में विश्वास करना पुराने ज़माने की बात लगती है, लेकिन देखा जाए तो अलौकिक शक्तियों के बारे में लोगों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। आज कई लोग अपना भविष्य जानने या बुरी बला से बचने के लिए प्रश्न-फल की तख्तियाँ देखते हैं, ओझों के पास जाते हैं और तावीज़ पहनते हैं। जर्मन पत्रिका *फोकस* में छपा एक लेख "लैपटॉप एण्ड लूसिफर" कहता है, "इंटरनेट की वजह से भूत-विद्या में लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है।"

क्या आपको मालूम है कि बाइबल भी भूत-विद्या के बारे में बताती है? बाइबल का नज़रिया जानकर शायद आपको हैरानी हो।

भूत-विद्या के बारे में बाइबल क्या कहती है?

परमेश्वर ने अपने लोगों यानी प्राचीन इसराएल राष्ट्र को दिए कानून में उनसे कहा था: "तुझ में कोई ऐसा न हो जो . . . भावी कहनेवाला, वा शुभ अशुभ मुहूर्त्तों का माननेवाला, वा टोन्हा, वा तान्त्रिक, वा बाजीगर, वा ओझों से पूछनेवाला, वा भूत साधनेवाला, वा भूतों का जगानेवाला हो। क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं।" (व्यवस्थाविवरण 18:10-12) यहोवा ने भूत-विद्या के खिलाफ इतना सख्त कानून क्यों दिया?

जैसा कि इस लेख के शुरू में दिया अनुभव दिखाता है, कई लोग मानते हैं कि हम मरे हुओं से बात कर सकते हैं और भूत-विद्या के ज़रिए जो जानकारी मिलती है वह असल में मरे हुए लोग ही देते हैं। लोगों में यह धारणा इसलिए है, क्योंकि बहुत-से धर्म सिखाते हैं कि मरने के बाद इंसान आत्मिक लोक में जीवित रहता है। मगर बाइबल साफ-साफ बताती है: "मरे हुए कुछ भी नहीं जानते।" (सभोपदेशक 9:5) बाइबल मौत की तुलना गहरी नींद से करती है। मरे हुए लोगों को अपने चारों तरफ होनेवाली घटनाओं की कोई खबर नहीं रहती।*

* नाम बदल दिए गए हैं।

* मरे हुए किस दशा में हैं, इस बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए *बाइबल असल में क्या सिखाती है?* किताब का अध्याय 6 देखिए। इसे यहोवा के साक्षियों ने प्रकाशित किया है।

(मत्ती 9:18, 24; यूहन्ना 11:11-14) अगर ऐसा है तो शायद आपके मन में ये सवाल उठेंः कई लोग तो कहते हैं कि उन्होंने भूत-प्रेत देखे या उनकी आवाज़ें सुनी हैं। अगर वे मरे हुए लोग नहीं, तो फिर कौन हैं? आखिर सच्चाई क्या है?

आत्मिक लोक से नाता

बाइबल में दर्ज़ ब्यौरे बताते हैं कि धरती पर रहते वक्त कई बार यीशु की बातचीत आत्मिक प्राणियों से हुई। मरकुस 1:23, 24 में लिखा है कि "एक दुष्ट स्वर्गदूत" ने यीशु से कहा, "मैं जानता हूँ तू असल में कौन है।" इसमें कोई शक नहीं कि ये आत्मिक प्राणी आपको भी अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन क्या आप उनकी असलियत जानते हैं?

इंसानों को बनाने से पहले परमेश्वर ने करोड़ों आत्मिक बेटों, यानी स्वर्गदूतों की सृष्टि की थी। (अय्यूब 38:4-7) स्वर्गदूतों की रचना इंसानों से कहीं बढ़कर की गयी है। (इब्रानियों 2:6, 7) वे बहुत शक्तिशाली और बुद्धिमान हैं और उन्हें परमेश्वर की मरज़ी पूरी करने के लिए बनाया गया है। भजनहार ने लिखाः "हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े पराक्रमी हो, और उसके वचन की पुकार को सुनते हो, तुम जो उसके वचन का पालन करते हो, उसको धन्य कहो!"—भजन 103:20, *अ न्यू हिंदी ट्रांस्लेशन।*

बाइबल बताती है कि समय के गुज़रते, कुछ स्वर्गदूत परमेश्वर की मरज़ी के खिलाफ गलत तरीके से इंसानों के साथ संपर्क रखने लगे। किस मकसद से? पहली बार जिस स्वर्गदूत ने ऐसा किया, उसने धोखे से पहले इंसानी जोड़े आदम और हव्वा को उनके सृष्टिकर्ता के खिलाफ भड़काया। इस तरह उसने खुद को शैतान या इब्लीस बना लिया, जिसका मतलब है परमेश्वर की निंदा करनेवाला या उसका विरोधी।—उत्पत्ति 3:1-6.

बाद में दूसरे कुछ स्वर्गदूतों ने स्वर्ग में "अपने रहने की सही जगह छोड़ दी" और धरती पर इंसानों का शरीर धारण करके सुंदर स्त्रियों के साथ रहने लगे। (यहूदा 6; उत्पत्ति 6:1, 2) इन स्वर्गदूतों के जो बच्चे हुए, वे इंसानों से कहीं ज़्यादा ताकतवर थे। इन्होंने और बगावती स्वर्गदूतों ने इतना आतंक मचाया कि पूरी धरती "उपद्रव से भर गई।" बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने नूह के दिनों में जलप्रलय लाकर उस समय की दुष्ट और हिंसक पीढ़ी का सफाया कर दिया।—उत्पत्ति 6:3, 4, 11-13.

जलप्रलय में बगावती स्वर्गदूत, इंसानी शरीर छोड़कर वापस स्वर्ग जाने पर मजबूर हो गए। लेकिन सृष्टिकर्ता ने उन्हें स्वर्ग में उस जगह लौटने नहीं दिया, जो धरती पर आने से पहले उनकी थी। इसके बजाय, उन्हें एक ऐसी गिरी हुई दशा में कैद कर दिया गया, जिसकी तुलना "घोर अंधकार से भरे गड्ढों" से की गयी है। (2 पतरस 2:4, 5) बाइबल इन बागी स्वर्गदूतों को "दुष्ट स्वर्गदूत" कहती है और भूत-विद्या के पीछे इन्हीं का हाथ है।—याकूब 2:19.

दुष्ट स्वर्गदूत क्या चाहते हैं

दुष्ट स्वर्गदूतों का इंसानों से बात करने का पहला मकसद है, उन्हें सच्चे परमेश्वर यहोवा की उपासना से गुमराह करना। जादू-टोना करनेवाले दावा करते हैं कि उन्हें वरदान या शक्तियाँ मिली हैं। लेकिन इनसे सिर्फ लोगों का ध्यान भटकता है और ये उन्हें परमेश्वर के बारे में सच्चा ज्ञान लेने और उसके साथ एक रिश्ता कायम करने से दूर रखती हैं।

उनका दूसरा मकसद क्या है? यह हमें उस बातचीत से पता चलता है, जो दुष्ट स्वर्गदूतों के सरदार शैतान और यीशु के बीच हुई। शैतान ने यीशु को "दुनिया के तमाम राज्य और उनकी शानो-शौकत दिखायी।" बदले में वह क्या चाहता था? उसने यीशु से कहा, 'एक बार मेरे सामने गिरकर मेरी उपासना कर।' जी हाँ, शैतान और दुष्ट स्वर्गदूत चाहते हैं कि लोग उनकी उपासना करें। लेकिन यीशु, शैतान के झाँसे में नहीं आया। उसने परमेश्वर और सच्ची उपासना को नहीं छोड़ा।—मत्ती 4:8-10.

दुष्ट स्वर्गदूतों ने जिस तरह यीशु से आमने-सामने बात की, आजकल वे शायद ही ऐसा करते हों। लेकिन भोले-भाले

जादू-टोना लोगों को परमेश्वर के साथ एक अच्छा रिश्ता बनाने से रोकता है

लोगों को फँसाने के लिए वे ऐसे तरीके इस्तेमाल करते हैं, जिनमें लोगों को कोई नुकसान नज़र नहीं आता। जैसे क्रिस्टल-बॉल, तोते के ज़रिए भविष्य बताना, टैरो कार्ड, पेंडुलम और राशिफल। मगर इनसे धोखा मत खाइए! ये चीज़ें हमारे लिए रहस्यमय दुनिया का रास्ता नहीं खोलतीं। जादू-टोना लोगों को दिलचस्प लगता है और दुष्ट स्वर्गदूत इसी का फायदा उठाकर उन्हें यहोवा की उपासना से दूर ले जाते हैं। जब इन सब तरीकों से भी दुष्ट स्वर्गदूत अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाते, तो अकसर वे उन लोगों का जीना दूभर कर देते हैं जो उनके चंगुल में फँसे होते हैं। अगर आपके साथ भी ऐसा हुआ है, तो आप उनसे बचने के लिए क्या कर सकते हैं?

भूत-विद्या के चंगुल से कैसे छूटें

इसमें कोई दो राय नहीं कि जो आत्मिक प्राणी इंसानों से बात करने की कोशिश करते हैं, वे परमेश्वर के दुश्मन हैं और उनका नाश तय है। (यहूदा 6) वे बहरूपिये और झूठे हैं, जो मरे हुओं का स्वाँग रचते हैं। सोचिए, अगर आपको पता चलता है कि जिसे आप अपना दोस्त समझ रहे हैं, वह असल में एक बहरूपिया है और आपको नुकसान पहुँचाना चाहता है, तो आपको कैसा लगेगा? या अगर आपको पता चलता है कि आप अनजाने में इंटरनेट पर किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रिश्ता बना बैठे हैं जो लोगों को अपनी हवस का शिकार बनाता है, तो आप क्या करेंगे? दुष्ट स्वर्गदूतों के जाल में फँसना इससे कई गुना खतरनाक है। आपको उनसे नाता तोड़ने की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए आप क्या कर सकते हैं?

प्राचीन इफिसुस के कुछ लोगों ने जब बाइबल से सीखा कि भूत-विद्या गलत है, तब उन्होंने जादू-टोने से जुड़ी अपनी सारी किताबें नष्ट कर देने का फैसला किया। हालाँकि उन किताबों की कीमत बहुत ज़्यादा थी, फिर भी उन्होंने "सबके सामने उन्हें जला दिया।" (प्रेषितों 19:19, 20) आज सिर्फ किताबों, तावीज़, प्रश्न-फल की तख्तियों के ज़रिए ही भूत-विद्या नहीं की जाती, बल्कि ऐसी कई डीवीडी, कंप्यूटर गेम और इंटरनेट साइट हैं जो इससे जुड़ी होती हैं। ऐसी हर चीज़ से दूर रहिए जो भूत-विद्या से जुड़ी हो सकती है।

जैसा कि इस लेख की शुरूआत में बताया गया था, बारबरा और योआकिम को टैरो कार्ड से पता चला कि उनके घर कुछ खतरनाक लोग आनेवाले हैं। और उन्हें न तो उनकी सुननी चाहिए, न ही उनसे कुछ लेना चाहिए। लेकिन जब कॉनी और गुडरून नाम के दो यहोवा के साक्षी उनके घर आए और उनसे कहा कि वे परमेश्वर के बारे में खुशखबरी देने आए हैं, तो बारबरा और योआकिम ने उनकी बात सुनने का फैसला किया। बातों-ही-बातों में भूत-विद्या का विषय छिड़ गया और कॉनी और गुडरून ने उन्हें इस बारे में बाइबल से सही-सही जानकारी दी। नतीजा यह हुआ कि बारबरा और योआकिम नियमित तौर पर बाइबल से चर्चा करने लगे।

जल्द ही योआकिम और बारबरा ने फैसला किया कि वे दुष्ट स्वर्गदूतों से अपने सारे नाते तोड़ देंगे। साक्षियों ने उन्हें समझाया कि ऐसा करने से दुष्ट स्वर्गदूत उन्हें परेशान कर सकते हैं। उनके साथ यही हुआ, उन्हें कई मुश्किलों से गुज़रना पड़ा और दुष्ट स्वर्गदूतों ने उन्हें बहुत सताया। वे डर के मारे रात को भी चैन से नहीं सो पाते थे। जब उन्होंने अपना घर बदला, तब जाकर उन्हें थोड़ी राहत मिली। इस मुश्किल दौर में उन्होंने फिलिप्पियों 4:13 के शब्दों पर अपना भरोसा बनाए रखा: "जो मुझे ताकत देता है, उसी से मुझे सब बातों के लिए शक्ति मिलती है।" यहोवा ने उनके इस फैसले पर आशीष दी और आखिरकार दुष्ट स्वर्गदूतों ने उन्हें सताना छोड़ दिया। आज वे खुशी-खुशी सच्चे परमेश्वर यहोवा की सेवा कर रहे हैं।

> "परमेश्वर के करीब आओ और
> वह तुम्हारे करीब आएगा।"—याकूब 4:8

जो कोई यहोवा की आशीष पाना चाहता है, बाइबल उसे बढ़ावा देती है: "खुद को परमेश्वर के अधीन करो, मगर शैतान का सामना करो और वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। परमेश्वर के करीब आओ और वह तुम्हारे करीब आएगा।" (याकूब 4:7, 8) अगर आप दुष्ट स्वर्गदूतों के चंगुल से आज़ाद होना चाहते हैं, तो यकीन रखिए कि यहोवा परमेश्वर ज़रूर आपकी मदद करेगा। योआकिम और बारबरा आज जब पीछे मुड़कर देखते हैं कि वे किस तरह भूत-विद्या से आज़ाद हुए, तो वे भजन 121:2 में लिखे शब्दों को सच पाते हैं: "मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है।"

(*w12*-E 03/01)

यहोवा ने मेरी आँखें खोल दीं!

पैट्रीस ओयेका की ज़ुबानी

शाम होने लगी थी। पूरा दिन रेडियो बजता रहा। मेरी ज़िंदगी का एक और दिन तनहाई में बीत गया। मेरी आँखों के सामने फैले अँधेरे ने मेरी ज़िंदगी को भी अँधियारा कर दिया था। जीने की कोई चाहत नहीं रह गयी थी। मैंने एक कप में पानी लिया और उसमें ज़हर मिला दिया। लेकिन फिर मैंने कप मेज़ पर ही रख दिया, क्योंकि मरने से पहले मैं आखिरी बार, नहा-धोकर अच्छे कपड़े पहनना चाहता था। आखिर मैंने खुदकुशी करने की कोशिश क्यों की? लेकिन ऐसा क्या हुआ कि मैं आज आपको अपनी कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा हूँ?

मेरा जन्म 2 फरवरी, 1958 को डेमाक्रेटिक रिपब्लिक काँगो के कासाई ओरीयांटाल प्रांत में हुआ था। जब मेरी उम्र बस नौ साल की थी, तब मेरे पिताजी की मौत हो गयी। इसके बाद मेरे बड़े भाई ने मेरी परवरिश की।

स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद मैं एक रबर के बागान में नौकरी करने लगा। सन् 1989 की बात है। एक दिन सुबह मैं अपने दफ्तर में एक रिपोर्ट तैयार कर रहा था। अचानक मेरी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। पहले तो मुझे लगा कि बिजली चली गयी है। लेकिन फिर मुझे खयाल आया कि यह तो दिन का वक्त है और मुझे जनरेटर की आवाज़ साफ सुनायी दे रही थी। मैं एकदम से बौखला उठा! मुझे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था, यहाँ तक कि मेरे सामने रखे कागज़ भी नहीं।

मैंने फौरन अपने एक साथी कर्मचारी से कहा कि वह मुझे कंपनी की डिस्पेंसरी में काम करनेवाले डॉक्टर के पास ले चले। डॉक्टर ने देखा कि मेरी आँखों के दृष्टि-पटल (रेटिना) फट चुके हैं, इसलिए उसने मुझे राजधानी किन्शासा में किसी अनुभवी डॉक्टर को जाकर दिखाने की सलाह दी।

आगे क्या हुआ?

किन्शासा पहुँचकर मैं कई आँखों के डॉक्टरों के पास गया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तैंतालिस दिन अस्पताल में रहने के बाद डॉक्टरों ने मुझसे कहा कि मेरी आँखों की रौशनी कभी नहीं लौट सकती। मेरे परिवार के लोग मुझे अलग-अलग चर्च में ले गए, इस उम्मीद में कि कोई चमत्कार हो जाए और मेरी आँखें ठीक हो जाएँ। लेकिन सारी कोशिशें बेकार रहीं।

मैंने आँखों की रौशनी पाने की सारी उम्मीदें छोड़ दीं। मेरी ज़िंदगी में घोर अँधेरा छा गया। मेरी नौकरी छूट गयी। मेरी पत्नी भी मुझे छोड़कर चली गयी। जाते-जाते वह घर का सारा सामान भी ले गयी। मैं घर से बाहर निकलने, लोगों से मिलने से कतराने लगा। मैं सारा दिन घर में अकेले पड़ा रहता था। मुझे लगता था कि मैं धरती पर एक बोझ हूँ।

मैंने दो बार खुदकुशी करने की कोशिश की। शुरूआत में मैंने जिस घटना के बारे में बताया था, वह मेरी दूसरी कोशिश थी। एक छोटे बच्चे की वजह से उस बार मेरी जान बच गयी। जब मैं नहा रहा था, तो उस बच्चे ने गलती से कप का पानी फेंक दिया। शुक्र है कि उसने वह पानी पिया नहीं। जब मैं नहाकर निकला, तो कप ढूँढ़ने लगा। कप न मिलने पर मैं बहुत निराश हो गया। मजबूर होकर मुझे अपने परिवारवालों को बताना पड़ा कि मैं कप क्यों ढूँढ़ रहा था।

मैं परमेश्वर का और अपने परिवार के लोगों का एहसानमंद हूँ कि उन्होंने हमेशा मेरा खयाल रखा। इसके बाद से मैंने कभी खुदकुशी करने की कोशिश नहीं की।

ज़िंदगी में खुशियाँ लौट आयीं

सन् 1992 की बात है। एक रविवार को मैं घर पर बैठा सिगरेट पी रहा था कि दो यहोवा के साक्षी हमारे यहाँ आए। वे घर-घर जाकर सभी लोगों से मिल रहे थे। जब उन्हें पता चला कि मैं अंधा हूँ, तो उन्होंने बाइबल से यशायाह 35:5 पढ़ा, जहाँ लिखा है: "तब अन्धों की आंखें खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे।" यह सुनते ही मैं खुशी के मारे झूम उठा। चर्च के लोगों की तरह यहोवा के साक्षियों ने मुझसे यह नहीं कहा कि किसी चमत्कार के ज़रिए मेरी आँखें ठीक हो जाएँगी। इसके बजाय उन्होंने कहा कि जब परमेश्वर नयी दुनिया लाएगा तो मैं फिर से देख सकूँगा, लेकिन पहले मुझे परमेश्वर के बारे में सीखना होगा। (यूहन्ना 17:3) मैंने तुरंत ही यहोवा के साक्षियों के साथ *आप पृथ्वी पर परादीस में सर्वदा जीवित रह सकते हैं* नाम की किताब से बाइबल का अध्ययन शुरू कर दिया। मैं उनकी सारी सभाओं में भी जाने लगा। मैंने अपनी ज़िंदगी में कई बदलाव किए, जैसे मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया।

लेकिन अंधा होने की वजह से मैं परमेश्वर की सेवा में आगे नहीं बढ़ पा रहा था। इसलिए मैं ब्रेल भाषा सीखने लगा। इसका फायदा यह हुआ कि मैं सभाओं के उन भागों में हिस्सा ले सका, जिनमें प्रचार और सिखाने के काम का प्रशिक्षण दिया जाता है। जल्द ही मैं अपने पड़ोसियों को अपने विश्वास के बारे में बताने लगा। मेरी ज़िंदगी में खुशियाँ लौटने लगीं। मैं परमेश्वर का ज्ञान लेता गया और अपनी ज़िंदगी यहोवा को समर्पित कर दी। इस समर्पण की निशानी के तौर पर मैंने 7 मई, 1994 को बपतिस्मा लिया।

जैसे-जैसे मेरे दिल में यहोवा और दूसरों के लिए प्यार बढ़ा, मेरे अंदर यहोवा की सेवा में और ज़्यादा करने की इच्छा बढ़ी। इसलिए 1 दिसंबर, 1995 से मैं एक पायनियर के तौर पर सेवा करने लगा। उन यहोवा के साक्षियों को पायनियर कहा जाता है, जो प्रचार काम में ज़्यादा वक्त बिताते हैं। फरवरी 2004 से मैं अपनी मंडली में एक प्राचीन के तौर पर सेवा कर रहा हूँ। कभी-कभार मुझे आस-पास की मंडलियों में भाषण देने के लिए भी बुलाया जाता है। ये सभी ज़िम्मेदारियाँ मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है, जिनसे मुझे बेहद खुशी मिलती है। मैंने देखा है कि अगर हम दिल से यहोवा परमेश्वर की सेवा करना चाहते हैं, तो हमारी कोई भी कमज़ोरी हमें रोक नहीं सकती।

यहोवा ने मुझे "आँखें" दीं

जैसा कि मैं बता चुका हूँ, मेरी पत्नी मुझे छोड़कर चली गयी थी। लेकिन यहोवा ने मुझे बेसहारा नहीं छोड़ा। आनी मावांबू मेरी ज़िंदगी में आयी और उसने मेरी अपंगता के बावजूद मुझे अपना जीवन-साथी बनाया। इस तरह वह मेरी आँखें बन गयी। वह भी एक पायनियर है और घर-घर जाकर लोगों को परमेश्वर के बारे में बताने के काम में मेरा साथ देती है। जब मुझे मंडली में भाषण देना होता है, तो वह मुझे साक्षियों की किताबों-पत्रिकाओं से वे भाग पढ़कर सुनाती है जिनके आधार पर भाषण तैयार करना होता है। फिर मैं ब्रेल भाषा में अपना भाषण लिख लेता हूँ। मेरी पत्नी मेरे लिए यहोवा की तरफ से एक बहुत बड़ी आशीष है। मैंने नीतिवचन 19:14 में लिखी बात को पूरा होते देखा है, "घर और धन पुरखाओं के भाग में, परन्तु बुद्धिमती पत्नी यहोवा ही से मिलती है।"

यहोवा की आशीष से हमारे दो बच्चे हैं, एक लड़का और एक लड़की। मुझे उस पल का बेसब्री से इंतज़ार है जब मैं नयी दुनिया में उनके चेहरे देख पाऊँगा। यहोवा की एक और आशीष है कि मेरा बड़ा भाई भी बाइबल की सच्चाई को मानने लगा और उसने बपतिस्मा ले लिया। हम सभी एक ही मंडली में जाते हैं। मैं अपने भाई का एहसानमंद हूँ कि उसने हमें अपनी ज़मीन पर रहने के लिए एक घर दिया है।

भले ही मैं देख नहीं सकता, लेकिन मैं परमेश्वर की सेवा और ज़्यादा करने की इच्छा रखता हूँ क्योंकि उसने मुझे बेशुमार आशीषों से नवाज़ा है। (मलाकी 3:10) मैं हर दिन उससे प्रार्थना करता हूँ कि उसका राज जल्द आए, ताकि सभी की तकलीफें खत्म हो जाएँ। मैं अपने अनुभव के आधार पर यकीन के साथ कह सकता हूँ कि यहोवा की आशीष ही एक इंसान को धनी बनाती है और वह उसके साथ कोई दुख नहीं देता।—नीतिवचन 10:22.

(*w12*-E 06/01)

बाइबल पर आधारित भाषण देते हुए; अपने परिवार और भाई के साथ

कैसे चलाएँ खर्च
जब आमदनी हो कम

ओबेड दो बच्चों का पिता है। वह दस साल से अफ्रीका के एक बड़े शहर के पाँच सितारा होटल में नौकरी कर रहा था और बड़े आराम से अपने परिवार का खर्च उठा रहा था। वह इतने पैसे बचा भी लेता था कि बीच-बीच में अपने परिवार को लेकर देश के किसी राष्ट्रीय उद्यान में छुट्टियाँ मनाने चला जाता था। लेकिन जब होटल में ग्राहकों का आना-जाना कम हो गया, तो उसे नौकरी से निकाल दिया गया और इस तरह उसकी तंगी के दिन शुरू हो गए।

स्टीफन पिछले करीब 22 सालों से एक बहुत बड़े बैंक में काम कर रहा था। इस दौरान वह तरक्की करके मैनेजर भी बन गया। उसे बैंक की तरफ से कई सहूलियतें मिलीं, जैसे बँगला, गाड़ी, नौकर-चाकर और बड़े-बड़े स्कूलों में बच्चों की शिक्षा। जब उसके बैंक में कर्मचारियों को घटाया गया, तो उसे भी नौकरी से निकाल दिया गया। स्टीफन कहता है, "मैं और मेरा परिवार पूरी तरह टूट गया। मैं निराश और दुखी हो गया। मुझे कल की चिंता सताने लगी।"

इस तरह की घटनाएँ इक्का-दुक्का नहीं हैं। दुनिया-भर में आयी आर्थिक मंदी की वजह से लाखों लोगों को अपनी अच्छी-खासी नौकरी से हाथ धोना पड़ा है। हालाँकि उनमें से कई लोग दूसरी नौकरी ढूँढ़ पाए, लेकिन उन्हें कम तनख्वाह वाली नौकरी से समझौता करना पड़ा है जबकि महँगाई आसमान छू रही है। मंदी के बुरे असर से कोई भी देश अछूता नहीं, फिर चाहे वह अमीर हो या गरीब।

खरी बुद्धि की ज़रूरत

अगर हमारी नौकरी चली जाती है या हमें कम तनख्वाह में गुज़ारा करना पड़ता है, तो शायद हमारे मन में तरह-तरह के बुरे खयाल आएँ। माना कि ऐसे हालात में एक इंसान चिंताओं से पूरी तरह निजात नहीं पा सकता, लेकिन एक बुद्धिमान इंसान ने कहा था: "यदि तू विपत्ति के समय साहस छोड़ दे, तो तेरी शक्ति बहुत कम है।" (नीतिवचन 24:10) आर्थिक मंदी के समय में घबराने के बजाय, हमें परमेश्वर के वचन में दी "खरी बुद्धि" का इस्तेमाल करना चाहिए।—नीतिवचन 2:7.

हालाँकि बाइबल पैसों के मामले में सलाह देनेवाली किताब नहीं है, लेकिन इसमें ऐसी कई कारगर सलाह दी गयी हैं, जिनसे दुनिया-भर के लाखों लोगों को मदद मिली है। आइए इस मामले में बाइबल में दिए कुछ मूल सिद्धांतों पर गौर करें।

खर्च का हिसाब रखिए। बाइबल में दिए यीशु के इन शब्दों पर ध्यान दीजिए: "तुममें से ऐसा कौन है जो एक बुर्ज बनाना चाहता हो और पहले बैठकर इसमें लगनेवाले खर्च का हिसाब न लगाए, ताकि देख सके कि उसे पूरा करने के लिए उसके पास काफी पैसा है कि नहीं?" (लूका 14:28) इस सिद्धांत को लागू करने का मतलब है, बजट बनाना और उसी के मुताबिक खर्च करना। लेकिन यह मुश्किल हो सकता है, जैसा कि ओबेड ने भी कहा, "नौकरी छूटने से पहले जब हम सुपरमार्केट जाते थे, तो हमें ढेर सारी गैर-ज़रूरी चीज़ें खरीदने की आदत थी। हम कभी बजट नहीं बनाते थे, क्योंकि हमारे पास हमेशा इतना पैसा होता था कि जो जी चाहे हम खरीद सकते थे।" लेकिन अगर पहले से बजट बनाया जाए तो पैसे सिर्फ ज़रूरी चीज़ों पर खर्च होंगे और इस तरह कम पैसे में भी गुज़ारा हो पाएगा।

अपने जीने के तरीके में बदलाव लाइए। यह सच है कि पहले के मुकाबले एक सादी ज़िंदगी जीना मुश्किल हो सकता है, लेकिन ऐसा करना ज़रूरी है। स्टीफन कहता है, "साज़ो-सामान से भरे एक बड़े घर में रहने के बजाय, हम पैसा बचाने के लिए अपने छोटे-से घर में रहने चले गए। मुझे बच्चों का दाखिला ऐसे स्कूलों में कराना पड़ा जिनमें फीस कम थी, फिर भी पढ़ाई अच्छी थी।"

अगर आप चाहते हैं कि आपने अपने जीने के तरीके में जो बदलाव करने की सोची है, उसमें आप कामयाब हों तो ज़रूरी

है कि आप इस बारे में अपने परिवार से खुलकर बात करें। ऑस्टिन नौ साल से एक बैंक में काम कर रहा था, लेकिन फिर उसकी नौकरी छूट गयी। वह कहता है, "मैंने अपनी पत्नी के साथ मिलकर उन चीज़ों की सूची बनायी जिनकी हमें *वाकई* ज़रूरत थी। पहले हम खाने-पीने, घूमने-फिरने और कपड़ों पर बहुत ज़्यादा खर्च करते थे। इन सब में हमने कटौती की। मुझे खुशी है कि इस बदलाव में मेरे परिवार ने मेरा साथ दिया।" कभी-कभी हो सकता है कि छोटे बच्चे यह पूरी तरह न समझ पाएँ कि ऐसे फेरबदल क्यों ज़रूरी हैं। लेकिन आप माता-पिता उन्हें प्यार से समझा सकते हैं।

हर तरह का काम करने के लिए तैयार रहिए। अगर आपको ऑफिस में बैठकर काम करने की आदत है, तो शारीरिक काम करना शायद आपको बहुत मुश्किल लगे। ऑस्टिन कहता है, "बैंक में मैंने बड़े-बड़े पदों पर काम किया था, इसलिए छोटे-मोटे काम करने के लिए मुझे अपने मन को बहुत समझाना पड़ा।" यह सच भी है, क्योंकि कई बार हम इस बात की ज़्यादा फिक्र करते हैं कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचेंगे, लेकिन बाइबल की एक आयत नीतिवचन 29:25 में खबरदार किया गया है, "मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है।" अगर आप अपने परिवार का पेट भरना चाहते हैं, तो आपको ऐसे खयालों से दूर रहना होगा। यह आप कैसे कर सकते हैं?

नम्र होना बहुत ज़रूरी है। जब ओबेड की नौकरी छूट गयी, तो उसके जान-पहचान के एक आदमी ने उससे कहा कि वह उसे अपने गराज में नौकरी दे सकता है। ओबेड को गाड़ियों के रंग और उनके पुर्ज़े खरीदने के लिए धूल-भरी सड़कों पर दूर-दूर तक पैदल चलना पड़ता था। वह कहता है, "मुझे यह काम बिलकुल पसंद नहीं था, लेकिन कोई और काम मिलने की उम्मीद भी कम थी। नम्र होने से मुझे यह काम करने में मदद मिली। यहाँ मेरी तनख्वाह पहले के मुकाबले एक-चौथाई थी, पर यह मेरे परिवार की ज़रूरतें पूरी करने के लिए काफी थी।" क्या ऐसा नज़रिया रखने से आपको भी फायदा हो सकता है?

संतुष्ट रहिए। संतुष्ट रहने का मतलब है, जितना है उसी में खुश रहना। जो इंसान घोर तंगी का सामना कर रहा है, उसे शायद संतुष्ट रहने की बात बिलकुल अजीब लगे। लेकिन पहली सदी के एक मसीही प्रेषित पौलुस के शब्दों पर गौर कीजिए, जिसे पता था कि तंगी में रहना कैसा होता है। उसने लिखा: "मैं चाहे जैसे भी हाल में रहूँ उसी में संतोष करना मैंने सीख लिया है। मैं जानता हूँ कि कम चीज़ों में गुज़ारा करना कैसा होता है, और यह भी जानता हूँ कि भरपूरी में जीना कैसा होता है।"—फिलिप्पियों 4:11, 12.

आज के इस बदलते वक्त में हो सकता है कि आगे चलकर हमारे हालात अच्छे हो जाएँ, लेकिन ये और बदतर भी हो सकते हैं। इसलिए पौलुस की इस सलाह को दिल में बिठा लेना अच्छा होगा, जो उसने परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे: "परमेश्वर की भक्ति ही अपने आप में बड़ी कमाई है, बशर्ते कि जो हमारे पास है हम उसी में संतोष करें। इसलिए अगर हमारे पास खाना, कपड़ा और सिर छिपाने की जगह है, तो उसी में संतोष करना चाहिए।" पौलुस यह नहीं कह रहा था कि हमें आलसी बनना चाहिए बल्कि उसके कहने का मतलब था कि हमें अपने खाने-पहनने की ज़रूरतों के बारे में सही नज़रिया रखना चाहिए।—1 तीमुथियुस 6:6, 8.

सच्ची खुशी कैसे मिलती है?

सच्ची खुशी ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीने और दुनिया-भर की चीज़ें बटोरने से नहीं मिलती। यीशु ने कहा था: "लेने से ज़्यादा खुशी देने में है।" जी हाँ, खुशी और संतुष्टि तब मिलती है जब हम अपनी चीज़ों से दूसरों की मदद करते हैं और उनकी हौसला-अफज़ाई करते हैं।—प्रेषितों 20:35.

हमारा सृष्टिकर्ता यहोवा परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को अच्छी तरह जानता है। अपने वचन बाइबल में उसने कारगर सलाह दी हैं जिनकी मदद से कई लोग अपनी ज़िंदगी बेहतर बना पाए हैं और बेकार की चिंताओं से बच पाए हैं। यह सच है कि बाइबल की सलाह लागू करने से तुरंत एक इंसान की तंगी दूर नहीं हो जाती, लेकिन यीशु ने भरोसा दिलाया कि जो लोग "पहले [परमेश्वर] के राज और उसके स्तरों के मुताबिक जो सही है उसकी खोज में लगे" रहते हैं उनकी रोज़ाना की सारी ज़रूरतें पूरी हो जाएँगी।—मत्ती 6:33. (*w12*-E 06/01)

क्या आप चाहते हैं कि कोई आकर आपसे मिले?

दुख-तकलीफों से भरी इस दुनिया में भी आप सच्ची खुशी पा सकते हैं। मगर इसके लिए आपको जानना होगा कि परमेश्वर और उसके राज के बारे में बाइबल क्या कहती है और इंसानों के लिए परमेश्वर का मकसद क्या है। अगर आप इस बारे में और जानना चाहते हैं या चाहते हैं कि कोई आपके घर आकर आपके साथ मुफ्त बाइबल अध्ययन करे, तो कृपया पेज 4 पर दिए किसी भी नज़दीकी पते पर यहोवा के साक्षियों को लिखिए।